भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : V ISSUE : 1 MUMBAI, JULY 2014 PAGES : 40 PRICE : ₹25

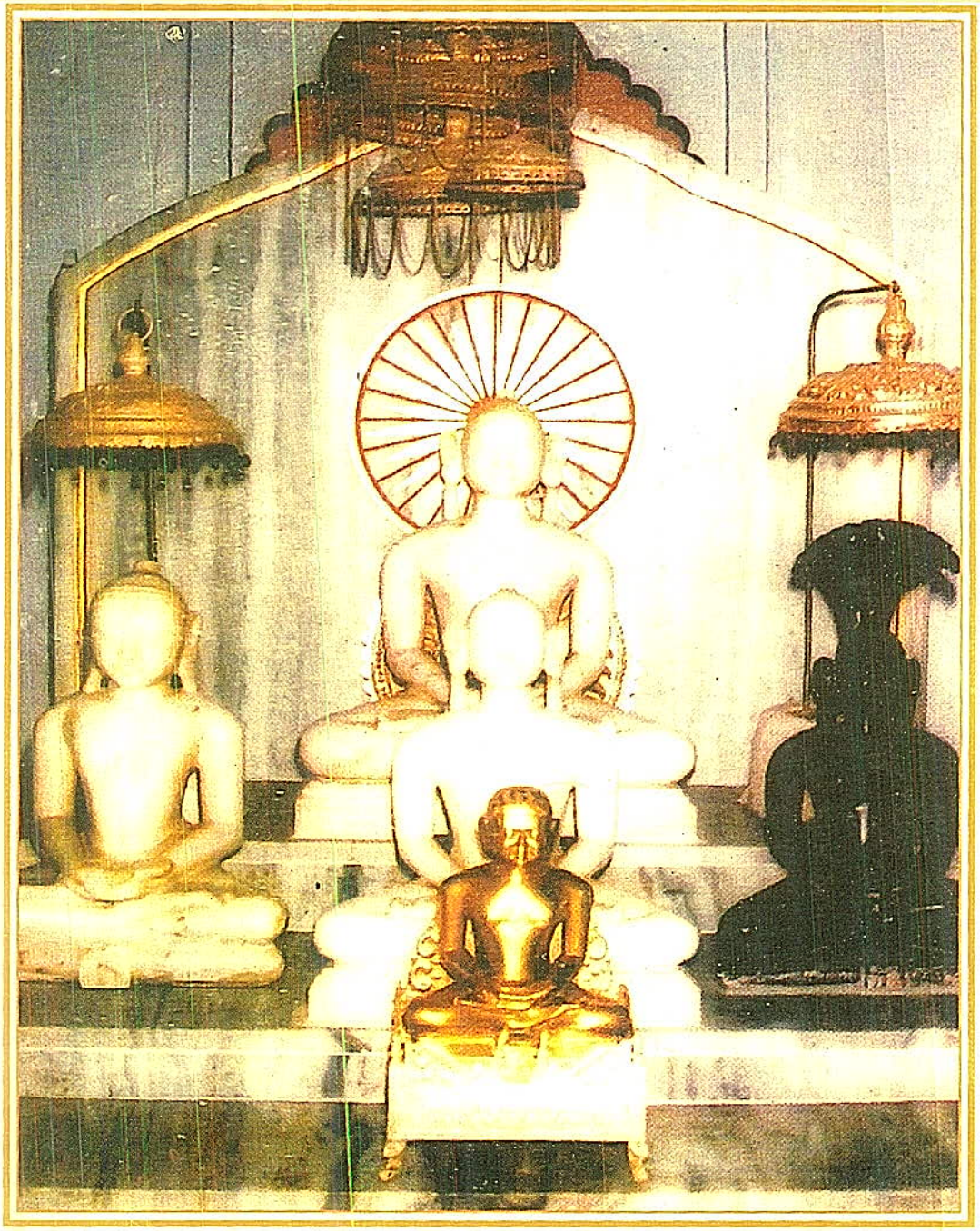

भगवान श्री सुपार्श्वनाथजी का जन्म कल्याणक क्षेत्र - वाराणसी (भदैनी)

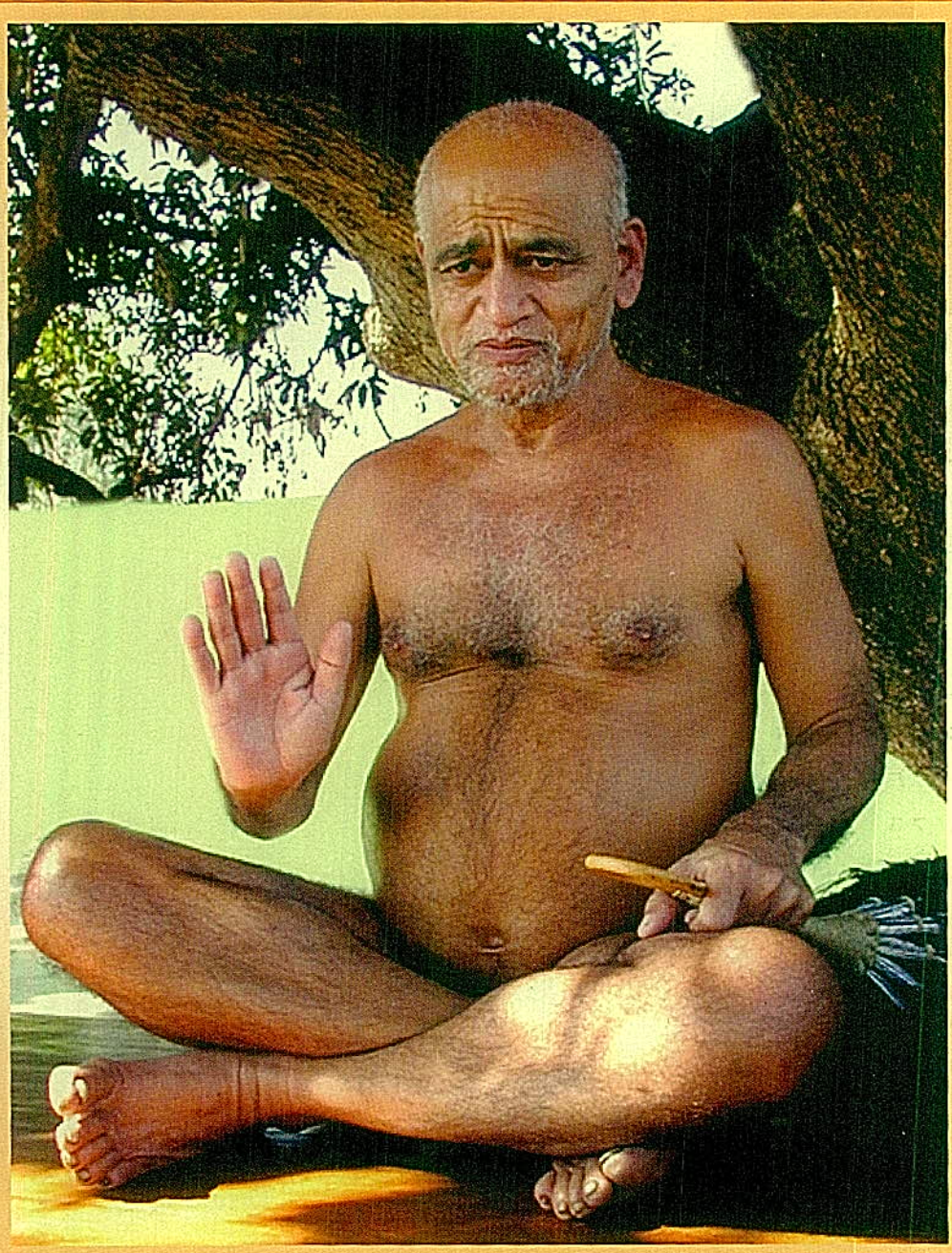

मंत्रों के मेरूदण्ड, द्वादशांग के व्याख्यान आप हैं।
मिटती मानवता के महायान अभियान आप हैं।।
माना कि काल दोष के कारण चौबीसी जन्म नहीं लेती।
लेकिन हम भक्तों को चौबीसी की पहचान आप हैं।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, 250501-5, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

प्रिय साधर्मी भाईयों एवं बहिनों,

सादर जय जिनेन्द्र।

ग्रीष्म काल अपने पूरे उन्माद पर आरूढ़ हो तपन फैला रहा है। मानसून के मेघ हवाओं के रथ पर सवार होकर आकाश पर आँखमिचौली कर छुप रहे हैं। वर्षा की फुहारें छुट-पुट रूप से बरस कर सघन मेघों की प्रतीक्षा कर रही है। मानसून अपने निश्चित तिथियों से पिछड़ रहा है। उमस और गर्मी जैसे श्रमणों एवं मुनिराजों के विहार में उनके तपश्चरण का अंग बन रही प्रतीत हो रही है, लेकिन पूरे भारतवर्ष में वर्षायोग / चातुर्मास स्थापना से श्रावकगण अपने-अपने पुण्य को तौलने का उपक्रम करते नजर आ रहे हैं।

जब तक यह अंक आपके हाथों में होगा तब तक महाश्रमणों, आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका संघों, तपस्वियों की वर्षायोग कलश स्थापना नगरों, ग्रामों, तीर्थों में हो चुकी होगी। उन सभी स्थानों पर केशरिया ध्वज धर्म प्रभावना हेतु आकाश में झूमते दिख जावेंगे। यही वह समय है जब हम सभी दैनिक जीवनचर्या से थोड़ा समय निकालकर धर्म के मर्म को समझने का प्रयास कर पाते हैं। कुछ अंतःकरण में झांकने का पुरुषार्थ कर पाते हैं, कुछ गुन पाते हैं, कुछ सुन पाते हैं, कुछ अंगीकार कर पाते हैं।

भगवान नेमिनाथ स्वामी के निर्वाण दिवस पर प्रतिवर्ष हजारों श्रद्धालु श्री गिरनारजी सिद्धक्षेत्र पर पांचवीं टोंक पर (मोक्ष स्थली चरणों पर) निर्वाण लाडू चढ़ाते आये हैं।

इस वर्ष भगवान नेमिनाथ के दिनांक 5/7/2014 के निर्वाण दिवस पर निर्वाण लाडू चढ़ाने के विषय में हमने जूनागढ़ के जिलाधीश महोदय को कानूनी व्यवस्था के लिए अनुरोध किया था। इस संबंध में जिलाधीश महोदय द्वारा बुलाई गई मीटिंग में तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं स्थानीय जैन संस्थाओं के पदाधिकारियों को न बुलाकर कुछ स्थानीय लोगों तथा यात्रियों को बुलाकर पूर्व नियोजित साठ-गांठ के अनुसार अनुचित निर्णय लिया गया, तदनुसार निर्वाण लाडू मोक्ष स्थली चरणों के बजाय 10 सीढ़ी नीचे निर्वाण लाडू चढ़ाने पर बाध्य किया गया, इससे जैन धर्म के अनुयायियों के साथ अन्यायपूर्ण एवं उच्च न्यायालय के आदेश की अवमानना जाहिर होती है। इस गैर कानूनी कार्यवाही के विरुद्ध हमारे प्रतिनिधियों ने जिलाधीश महोदय से 5/7/2014 को भेंट भी की तथा उन्हें यह निर्णय अस्वीकार करता हुआ विरोध पत्र भी दिया।

गिरनार जी का मुद्दा उच्च न्यायालय में विचाराधीन है एवं पूरे देश के जैन समाज की ओर से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी शुरू से ही विवादों के निराकरण हेतु सर्वांगीण पहल करती आ रही है। किन्हीं भी स्थानीय लोगों एवं तीर्थयात्रियों को बिना तीर्थक्षेत्र कमेटी के परामर्श के कोई भी प्रक्रिया नहीं स्वीकारना चाहिये।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक श्रद्धेय डॉ. हेडगेवार जी के शब्दों में :

'No matter how great our religion and culture, until we develop the strength needed for their protection, they will not be fit to get the respect of the world'.

बंधुओं उपरोक्त संदेश को आत्मसात कर हमें संकल्प लेना होगा कि धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हेतु, तीर्थों की सुरक्षा हेतु जैन समाज को अपनी शक्ति एवं संगठन को प्रभावी रूप देना होगा, तभी हम सफल हो सकेंगे।

आप सभी से, अंचलों के अध्यक्षों एवं पदाधिकारियों से करबद्ध निवेदन है कि सभी ग्राम, नगर एवं क्षेत्रों पर जहाँ-जहाँ संतों के चातुर्मास हो रहे हैं एक दिन का विधान का भव्य आयोजन करें एवं उस विधान के पात्रों की राशि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई को भेजें। तीर्थक्षेत्र कमेटी के हाथों को मजबूती प्रदान करें। क्षेत्रों की रक्षा-सुरक्षा हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करें।

''नहीं साधना, ना कुछ साधन, कैसे कर पाऊँ आराधन
न तो श्रुत अभ्यास किया है ना कर पाया आत्म-विलोकन
ज्योति हीन मेरे लोचन हैं, कैसे आरती-दीप जलाऊँ
भगवान तुमको कैसे पाऊँ ''।।

जयघोष के साथ बोलिए 1008 भगवान नेमिनाथ स्वामी की जय

श्री सिद्धक्षेत्र गिरनार जी की जय हो, जय हो।

आपका ही,

सुधीर जैन

राष्ट्रीय अध्यक्ष

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 5 अंक 1 जुलाई 2014

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद्)

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में दीक्षित	5
आचार्य श्री के मुनिदीक्षा दिवस पर उत्साह का संचार	8
वे मेरे द्रोणाचार्य मैं उनका एकलव्य	9
जैन धर्म के सातवें तीर्थंकर भगवान् श्री सुपार्श्वनाथ जी	10
मानव मूल्यों की उद्भावना का आध्यात्मिक पर्व : चातुर्मास	12
और विद्याधर के भीतर का मुनित्व प्रकट हो गया	13
परोपकार ही स्वोपकार	18
रोगों के सरल उपचार	21
गोम्मटगिरि इन्दौर में म.प्र.का पहला बारह दिवसीय	22
30 जून से 4 जुलाई, 2014 तक पूर्वांचल के तीर्थक्षेत्रों का दौरा	26

गोम्मटगिरि (इंदौर) में क्षेत्र प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन

गतांक में दिनांक 27 जुलाई, 2014 को श्री गोम्मटगिरि क्षेत्र, इंदौर (म.प्र.) में आयोजित किये गये सम्मेलन की सूचना से आप सभी को अवगत किया था। आपके क्षेत्र के पते पर 12 पृष्ठों का सर्वेक्षण फार्म भी भिजवा दिया गया है। कृपया इन फार्मों को भरकर शीघ्र भिजवायें अथवा अपने साथ अधिवेशन में लायें। अधिवेशन में पधारने की सूचना अभी तक आपसे नहीं आयी है कृपया निम्नलिखित पते पर संपर्क कर अपने पधारने की सूचना अवश्य देवें-

- पंकज जैन,
महामंत्री

संपर्क सूत्र- 1. श्री विमल कुमार जैन(सोगानी), अध्यक्ष- मध्यांचल समिति.
19 नेमिनगर एक्सटेंशन, जैन कॉलनी, इंदौर-452009.मोबा.09826027577
2. प्रबंधक- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी,
हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुंबई - 400 004.मोबा.09833671770

धन के लिए धर्म नहीं होता, धर्म के लिए धन होता है। जहां धर्म है वहीं धन है ।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में दीक्षित वर्तमान आचार्यों में सर्वप्रथम आचार्य पदारूढ़ श्री विद्यासागर जी महाराज

डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन
बुरहानपुर (म.प्र.),मो. 9826565737

जैनधर्म में परमेष्ठी पूज्य हैं, परम पूज्य हैं। इनमें अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु आते हैं। सिद्ध एक क्षण भी पृथ्वी पर ठहरते नहीं। निर्वाण होते ही सिद्धालय में विराजमान हो जाती है यह आत्मा। अतः सिद्ध किसी ने देखे नहीं। अरहन्त अवश्य समवशरण में दिखाई देते हैं। पूर्व भव में इस जीव ने समवशरण में अरहन्त भगवान् को देखा होगा। मन्दिरों में अरहन्त और सिद्ध प्रतिमायें विराजमान की जाती हैं, उन्हीं के दर्शन, वन्दन, पूजन से व्यक्ति पुण्यार्जन करता है, आत्महित करता है। पंचपरमेष्ठी की प्रतिमायें भी एक साथ विराजमान की जाती हैं। देवगढ़ में उपाध्याय परमेष्ठी की मनोज्ञ प्रतिमा है।

दिगम्बर साधु की तीन कोटि हैं–साधु, उपाध्याय और आचार्य। ये चलते फिरते तीर्थ हैं। इन्हें 'मूलाचार' में भगवान् संज्ञा दी है–

भिक्खं वक्कं हिययं साधिय जो चरदि णिच्च सो साहू।
एसो सुद्विद साहू भणिओ जिणसासणे भयवं।।

अर्थात् जो आहार शुद्धि, वचन शुद्धि और मन की शुद्धि को रखते हुए सदा ही चारित्र का पालन करता है, जैनशासन में ऐसे साधु की 'भगवान्' संज्ञा है।

जिनसे आचरण ग्रहण किया जाता है उन्हें आचार्य कहते हैं। शिष्यों पर अनुग्रह करने में कुशल साधु को आचार्य कहते हैं–''सिस्साणुग्गहकुसलो''(मूलाचार, गाथा–156)।

''शासितुं योग्यः शिष्यः'' इस व्युत्पत्ति के अनुसार जो अनुशासन के योग्य हैं वे शिष्य कहलाते हैं। आचार्य ऐसे ही शिष्यों का संग्रह करते हैं और उन पर अनुग्रह करते हैं। इस विषय में मूलाचार गाथा–158,159 में कहा है कि–

संगहणुग्गहकुसलो सुत्तत्थविसारओ पहियकित्ती।
किरिआचरणसुजुत्तो गाहुय आदेज्जवयणो य।।
गंभीरो दुद्धरिसो सूरो धम्मप्पहावणासीलो।
खिदिससिसायरसरसो कमेण तं सो दु संपत्तो।।

अर्थात् वह आचार्य संग्रह और अनुग्रह में कुशल, सूत्र के अर्थ में विशारद, कीर्त्ति से प्रसिद्धि को प्राप्त, क्रिया और चारित्र में तत्पर और ग्रहण करने योग्य तथा उपादेय वचन बोलने वाला होता है।

जो गंभीर हैं, दुर्धर्ष हैं, शूर हैं और धर्म की प्रभावना करने वाले हैं, भूमि, चन्द्र और समुद्र के गुणों के सदृश हैं इन गुण विशिष्ट आचार्य को वह मुनि क्रम से प्राप्त करता है।

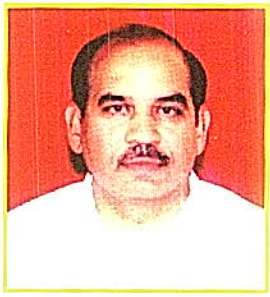

आचार्य छत्तीस गुणों के धारी होते हैं। इस विषय में भगवती आराधना गाथा–527 ,528में कहा है कि–

छत्तीसगुणसमण्णागदेण वि
अवस्समेव कायव्वा।
परसक्खिया विसोधी सुट्ठुवि ववहारकुसलेण।।
आयारवमादीया अट्ठगुणा दसविधो य ठिदिकप्पो।
बारस तव छावासय छत्तीसगुणा मुणेयव्वा।।

अर्थात् छत्तीस गुणों के धारण और व्यवहार में कुशल आचार्य को भी अवश्य अन्य मुनिकी साक्षी से अपने रत्नत्रय की विशुद्धि–अतिचारों को शोधन करना होता है। आठ ज्ञानाचार, आठ दर्शनाचार, बारह प्रकार का तप, पाँच समिति, तीन गुप्ति; ये छत्तीस गुण हैं।

आचारवत्त्व आदि आठ गुण, दस प्रकार का स्थितिकल्प, बारह तप, छह आवश्यक; ये छत्तीस गुण जानना चाहिए।

इस तरह जैनधर्म आचार परम्परा में आचार्य का पद बहुत महान् है। अतः इस पद के प्रति सभी का बहुमान होना चाहिए। जो वरिष्ठ आचार्य हैं उनकी आज्ञा का पालन कनिष्ठ आचार्यों और साधुओं को करना चाहिए। आज देखने में यह आ रहा है कि कुछ आचार्य अपनी परम्परा/आचार्य परम्परा की दुहाई देकर अपने आपको सर्वश्रेष्ठ बताने और जताने में संलग्न हैं। भक्तों के धनबल का सहारा लेकर वे अपनी जय–जयकार करवा रहे हैं और जनता को भ्रमित संदेश देने में कामयाब होते से लगते हैं कि मानो वही वरिष्ठ हैं। यदि वरिष्ठता का यही आधार है तो फिर दीक्षा की वरिष्ठता की आवश्यकता क्या है? यदि एक दिन या एक मिनट पूर्व दीक्षित मुनि एक दिन या एक मिनट बाद दीक्षित मुनि के लिए वरिष्ठ हो सकता है तो आचार्य क्यों नहीं ? दूसरे यह भी बता दें कि जितनी भी आचार्य परम्परायें हैं उनमें आचार्य पद या तो संघ ने दिया है या समाज ने या संघ और समाज दोनों ने। शास्त्र आज्ञा का भी हमें ध्यान रखना चाहिए।

वर्तमान में आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की शिष्य–प्रशिष्य परम्परा को देखें तो आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज सबसे पुराने आचार्य सिद्ध होते हैं। उन्हें आचार्य

शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में द्वितीय पट्टाचार्य श्री शिवसागर जी महाराज के द्वारा दीक्षित महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने अपना आचार्य पद प्रदान किया था। यहाँ उल्लेखनीय है कि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज को आचार्य पद चतुर्विध संघ एवं सकल दिगम्बर जैन समाज ने रेनवाल (जिला–जयपुर) में प्रदान किया था। उसी दिन श्री विवेकसागर जी महाराज एवं ब्र. श्री लक्ष्मीनारायण जी की मुनिदीक्षा सम्पन्न हुई थी। आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने अपना आचार्य पद अपने ही द्वारा दीक्षित मुनिश्री विद्यासागर जी महाराज को मार्गशीर्ष (अगहन) कृष्ण–2, वि.सं. 2029 तदनुसार दि. 22 नवम्बर, 1972 बुधवार को नसीराबाद (जिला–अजमेर) राजस्थान में प्रदान किया था और उनका शिष्यत्व ग्रहण कर उनसे सल्लेखना ग्रहण की थी। आचार्य पद देने का यह विरल उदाहरण है जिसकी सभी साधुओं, विद्वानों तथा समाज ने प्रशंसा की थी।

इस तरह चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की शिष्य–प्रशिष्य परम्परा के जीवित आचार्यों में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज सबसे वरिष्ठ आचार्य सिद्ध होते हैं। जो वर्तमान में विद्यमान आचार्य हैं उनका आचार्य पदारोहण क्रम इस प्रकार है–

1. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज–मार्गशीर्ष कृष्ण–2, वि.सं. 2029,दि. 22–11–1972, बुधवार, नसीराबाद (राज.), आचार्य पद प्रदाता–आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज।परम्परा इस प्रकार बनी– आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज, आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज, आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज, आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज, आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज।
2. आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज–दि. 28 जून, 1987, नई दिल्ली। परम्परा इस प्रकार बनी– आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज, आचार्य श्री पायसागर जी महाराज, आचार्य श्री जयकीर्ति जी महाराज, आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज, आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज।
3. आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज–आषाढ़ शुक्ल द्वितीया, दि. 24 जून सन् 1990 स्थान–पारसोला, राजस्थान। परम्परा इस प्रकार बनी– आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज, आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज, आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज, आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज, आचार्य श्री अजितसागर जी महाराज, आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज।
4. आचार्य श्री अभिनंदनसागर जी – दि. 8 मार्च, 1992 सं. 2049, खांदूकॉलोनी, बांसवाड़ा (राज.)। परम्परा इस प्रकार बनी– आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज, आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज, आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज, आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज, आचार्य अजितसागर जी महाराज, आचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज, आचार्य श्री अभिनंदनसागर जी महाराज।

आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर महाराज, आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज छाणी की परम्परा अलग है। आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर की परम्परा में वरिष्ठ आचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज (आचार्य पद माघ कृष्ण तृतीय, सं. 2029, 3 जनवरी, 1972, मेहसाणा), स्थविराचार्य श्री संभवसागर जी महाराज (स्थविराचार्य पद माघ कृष्ण तृतीय, सं. 2029, 3 जनवरी, 1972, मेहसाणा), आचार्य श्री पुष्पदंतसागर जी महाराज (युवाचार्य पद दि. 31 मार्च, 1986, गोम्मटगिरि, इन्दौर), आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज (दि. 8 नवम्बर, 1992, सिद्धक्षेत्र द्रोणगिर), आचार्य श्री सिद्धांतसागर जी (2 अगस्त, 1993, ब्यावर, राजस्थान), आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज (दि. 25 जनवरी, 2007, औरंगाबाद)–वर्तमान में आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर की परम्परा में चतुर्थपट्टाचार्य पद उनके पास है।

आचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज ने अपने द्वारा दीक्षित मुनियों में श्री कनकनंदि जी महाराज, श्री देवनंदि जी महाराज, श्री गुणधरनंदि जी महाराज, श्री पद्मनंदि जी महाराज, श्री कुशाग्रनंदि जी महाराज, श्री गुणधरनंदि जी महाराज, श्री गुप्तिनंदि जी महाराज, श्री इन्द्रनंदि जी महाराज, श्री कुमुदनंदि जी महाराज, श्री कल्पवृक्षनंदि जी महाराज आदि को आचार्य बनाया है। तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज के दीक्षित शिष्य श्री हेमसागर जी, श्री सुविधिसागर जी, श्री सुन्दरसागर जी महाराज भी आचार्य हैं।

आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज छाणी की परम्परा में आचार्य श्री सूर्यसागर जी महाराज, आचार्य श्री विजयसागर जी महाराज, आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज (भिण्ड), आचार्य श्री सुमतिसारग जी महाराज, आचार्य विद्याभूषण श्री सन्मतिसागर जी महाराज हुए। उनकी परम्परा में षष्ठ पट्टाचार्य के रूप में श्री ज्ञानसागर जी महाराज को दि. 27 मई, 2013 को बड़ागांव (बागपत, उ.प्र.) में प्रतिष्ठित किया गया। आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा आचार्य बनाये गये श्री मेरुभूषण जी तथा उनके द्वारा आचार्य बनाए गए श्री पारससागर जी महाराज भी आचार्य हैं। यदि आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज छाणी की परम्परा के अन्य आचार्यों में देखें तो गिरनार गौरव आचार्य श्री निर्मलसागर जी महाराज (दीक्षा गुरु– आचार्य श्री विमलसागर जी, भिण्ड) वर्तमान में हैं। उनके दीक्षित शिष्य श्री निर्भयसागर जी महाराज भी आचार्य हैं। आचार्य श्री दर्शनसागर जी महाराज ने अभी हालही में उपचार हेतु आचार्य पद छोड़कर क्षुल्लक पद ग्रहण किया है।

आचार्य श्री आदिसागर जी महाराज, आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी, आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज, आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज की परम्परा में श्री चैत्यसागर

धर्म वही है जो जीने की कला सिखलाता है।

जी महाराज वर्तमान में पट्टाचार्य हैं।

श्री विशदसागर जी महाराज, श्री विशुद्धसागर जी महाराज (31 मार्च, 2007, औरंगाबाद), श्री विमर्शसागर जी महाराज, आचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज, श्री विनिश्चयसागर जी महाराज, श्री विभवसागर जी महाराज, श्री विमदसागर जी महाराज आदि को भी आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने आचार्य पद प्रदान किया है।

और भी आचार्य परम्पराएं वर्तमान में चल रही हैं। संतों और विद्वानों तथा समाज को इस विषय में विचार करना चाहिए कि हम वरिष्ठता का आधार मानकर आचार्य पद की गरिमा बढ़ाएं या बिना किसी आधार के आचार्यों की श्रेष्ठता का गुणगान कर अहंपूर्ति में सहायक होते रहें। यहाँ उल्लेखनीय है कि आचार्य पद पूज्य है लेकिन स्वयंसिद्ध आचार्य बनना कहाँ तक उचित है? यह विचारणीय है। आज तो चिट्ठी–पत्री से, स्वयं के संस्कारों से, संघ छोड़ने की धमकी देकर आचार्य बन रहे हैं। क्या यह मुनि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के वृहत् संघ की एक आचार्य की परम्परा का अनुसरण नहीं कर सकते? क्या मुनिपद की गरिमा समाप्त हो गयी है?

सबसे श्रेयस्कर तो यही है कि हम जैनधर्म की ध्वजा को वरिष्ठ आचार्य के मार्गदर्शन में आगे बढ़ाएं और रत्नत्रय की आभा को दिग्–दिगन्त में फैलायें। आज एक आचार्य श्री महाश्रमण जी के नेतृत्व में श्वेताम्बर तेरापंथ गतिशील है। क्या दिगम्बर जैन समाज इसका अनुकरण नहीं कर सकती ? आज सभी साधुओं को पद से अधिक पद की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। इसी से जैनधर्म आगे बढ़ेगा।

तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण के लिए पूर्व के अनेक आचार्यों तथा वर्तमान के अनेक आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं ने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को अपना शुभाशीर्वाद प्रदान किया है। कमेटी के वर्तमान अध्यक्ष श्री सिंघई सुधीर जैन एवं कमेटी के अन्य पदाधिकारी विभिन्न साधु संघों में जाकर शुभाशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि तीर्थक्षेत्र कमेटी इन साधु वर्ग के आशीर्वाद से अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफल होगी। इस वर्षायोग (चातुर्मास) काल में सभी श्रावकों को तीर्थ संरक्षण हेतु दान भिजवाकर सहयोग करना चाहिए।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज : आदर्श संत

–डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन
मो 09926055754

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एक अप्रतिम व्यक्तित्व के धनी, ज्ञान सम्पन्न, चारित्र शिरोमणि आदर्श संत हैं। उनके तथाकथित विरोधियों में भी उनके जैसा बनने की चाह है; यही उनके संतत्व की पराकाष्ठा है। वे न होते तो किसे हम कहते कि "तुम भी बनो उनके जैसे।" "ते गुरु मेरे उर बसो, तारण–तरण जिहाज" का गुरु गंभीर प्रत्यक्ष रूप हमें उनके स्वरूप में दिखाई देता है। उन्होंने परम पूज्य महान् संस्कृतज्ञ आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज से घोर युवावस्था में मुनिदीक्षाग्रहण कर इस कलिकाल को इस कलंक से मुक्ति दिला दी कि पंचमकाल में सच्चे मुनि नहीं होते। आचार्य श्री कुन्दकुन्द की वाणी को सच्चा और खरा सिद्ध करने का महनीय पुरुषार्थ उन्होंने किया और जग को बताया कि जिनका आदर्श भगवन् जिनेन्द्र देव हों, आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव हों, आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज जैसे गुरु हों; एक दिन वह भी सबका आदर्श बन जाता है। उनकी चरण–रज पाने के लिए लोग पलक–पाँवड़े बिछाकर, नतमस्तक हो जाते हैं।

आचार्य श्री की कथनी और करनी उत्कृष्ट है। कम बोलो, तौलकर बोलो और अच्छा बोलो। जो तुम्हारे हाथ में नहीं उसे बोलो नहीं; बल्कि देखो। ज्ञाता–दृष्टा आतमराम की यह जीवन्त किंवदन्ती संतशिरोमणि हैं। जिस तरह कोई–बालक चाँद को देख ले तो उसी को पाने की जिद करता है। उसे अन्य चीजें लुभाती नहीं; इसी तरह जिसने आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज को देख लिया उसे अन्य छवि भाती नहीं। आज गुरुता के सुमेरु हैं वे। उनकी प्रशस्त चर्या, मंगल वाणी, चेहरे का तेज, मधुर मुस्कान, आशीर्वाद स्वरूप सद्धर्मवृद्धि के लिए उठा हुआ हाथ; इससे अधिक और क्या चाहिए ?

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के मुनि जीवन के ये 46वर्ष इस बात के साक्षी हैं कि उन्होंने निजी हितों की उपेक्षा की है। जीवहित को सर्वोपरि माना है। आगम की आज्ञा को अनुकरणीय मानकर अपने कर्म और आचरण का पर्याय माना है। वे जब चलते हैं तो उनके सधे कदमों के साथ संघस्थ साधुओं के ही नहीं अपितु साधारण जन के कदम भी सधे हुए उठने, चलने लगते हैं। उन्होंने प्राणि–रक्षा के भाव से मांस निर्यात का विरोध किया, राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा के लिए राजभाषा के रूप में हिन्दी का समर्थन किया। जहाँ धार्मिकता में वृद्धि की संभावना थी उन अमरकंटक, नेमावर, डोंगरगढ़, विदिशा आदि में नवतीर्थों की संरचना करवायी और जैनत्व का विस्तार करते हुए कहा कि–"जो णमोकार मंत्र बोले सो जैन।" आज जैनधर्म उनसे कीर्तिमान् है। मैं उनके मुनिदीक्षा दिवस पर उन्हें अपनी हार्दिक विनम्र विनयांजलि के साथ सादर नमोस्तु करता हूँ।

श्रमण साधना के सारस्वत, मूर्तिमान जिन गुण आगर।
'मूकमाटी' भी बोल उठी और तप–तप बन गयी गागर।।
क्यों न जगतीजन करे नमन, कितना मधुरिम यह सागर।
आओ मिलकर हम सब बोलें, जय हो सूरि विद्यासागर।।

धन साधन है साध्य नहीं। जैसे नाव को चलाने के लिए सरोवर में जल।

आचार्य श्री के मुनिदीक्षा दिवस पर उत्साह का संचार

– डॉ. रमेशचन्द जैन, डी.लिट्.

परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का मुनिदीक्षा दिवस साधु संस्था के प्रति सम्मान एवं उत्साह का संचार करता है। वे वर्तमान श्रमण–मुनि परम्परा के जाज्वल्पमान नक्षत्र हैं।जब कोई व्यक्ति मुझसे पूछता है कि 'जैनमुनि कैसा होना चाहिए तो मैं बड़े गर्वपूर्वक कहता हूँ कि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जैसा होना चाहिए।' उनके संघ का अनुशासन 'मूलाचार' के अनुकूल है। आचार्य श्री कुन्कुन्द स्वामी ने 'अष्टपाहुड' में लिखा है कि मुनि को लौकिक नहीं होना चाहिए। आचार्य श्री की दृष्टि सदा परमार्थ और पारलौकिक रहती है। वे निरतिचार चर्या का पालन करते हैं, प्रतिदिन संघ में स्वाध्याय की परम्परा है, प्रायश्चित विधान का पालन किया जाता है। उनकी प्रेरणाओं से तीर्थ एवं श्रुत संरक्षण के महान् कार्य हुए हैं।

जैन समाज का यह बहुत बड़ा सौभाग्य है कि यहाँ श्रावकों के निर्देशन हेतु श्रावकाचार–ग्रन्थ उपलब्ध है वहीं मुनियों के निर्देशन हेतु मूलाचार, भगवती आराधना, मूलाचार प्रदीप, अनगार धर्मामृत जैसे ग्रन्थ उपलब्ध हैं। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज और उनके द्वारा दीक्षित उनके आज्ञानुवर्ती शिष्य इन ग्रंथों के अनुरुप ही चर्या का निर्वाह करते हैं। आचार्य श्री के द्वारा विरचित संस्कृत शतक तथा हिन्दी महाकाव्य 'मूकमाटी' ने साहित्य संसार में अपना उच्च कोटिक स्थान बनाया है। वे साहित्यरसिकों के श्रद्धाभाजन हैं। जैनसमाज के लिए यह गौरव की बात है। मेरा उनके प्रति कोटिशः नमोस्तु।

मुनिदीक्षा दिवस पर प्रणाम

– डॉ. जयकुमार जैन (मुजफ्फरनगर)

संतशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का मुनिदीक्षा दिवस हम सबके लिए महाव्रतों की महिमा बताने वाला है। मुनि आत्मसाधना में लीन रहते हैं तथा स्वपर उपकार करते हैं। उनसे धर्म और धर्मात्मा दोनों आगे बढ़ते हैं। उन्होंने आचार्य के रूप में विशाल संघ की शिक्षा–दीक्षा में महती भूमिका निभायी है। मेरा उन्हें शत–शत प्रणाम।

लोकोपकारी संतशिरोमणि

–डॉ. श्रेयांसकुमार जैन

वर्तमान में दिगम्बर मुनिचर्या के आदर्श स्वरूप संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ने साहित्य की समृद्धि के साथ निर्ग्रन्थ मुनिपरम्परा का विशेष संवर्द्धन किया है। साहित्य के क्षेत्र में आचार्य श्री द्वारा रचित मूकमाटी आदि काव्य साहित्य का सृजन आदर्श है, जिससे समस्त बौद्धिक जगत् प्रभावित है। आचार्य श्री की लेखनी अनवरत रूप से चलती हुई जिन शासन की प्रभावना कर रही है। इनसे दीक्षित मुनिराज सम्पूर्ण देश में जिनधर्म की प्रभावना कर रहे हैं।

आचार्य पद को गौरवान्वित करते हुए लोकोत्तर कार्य आपकी प्रेरणा से हुए हैं। स्वहित के साथ परहित करते हुए देशान्तर में विहार कर धर्म पताका को पहरा रहे हैं।

अध्यात्म और सिद्धान्त के संवर्द्धन हेतु आपका चिन्तन निरन्तर चलता है यही कारण है कि आपके प्रवचन अध्यात्म और सिद्धान्त सम्मत होते हैं। आप सच्चे अर्थों में अध्यात्म पुरुष हैं क्योंकि श्रेष्ठ अनुशासक होते हुए अन्तर में जगत् के प्राणियों के प्रति करुणावान् हैं। अत्यधिक सरल और मृदु हैं। अध्यात्मिक सन्त की विशेषता ही होती है कि वह बाहर से कठोर और अन्तरंग में कोमल होता है; वही स्वरूप आपका है। अतः आचार्य श्री आध्यात्मिक संत हैं। इनके जीवन दर्शन का लाभ जगत् को सहस्रों वर्षों तक मिले; यही मंगल भावना है।

आचार्य प्रवर

– पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन, प्रतिष्ठाचार्य
रजबांस, सागर (म.प्र.)

रत्नत्रय स्वरूप मोक्षमार्ग में आचार्य परमेष्ठी शिक्षा, दीक्षा, आचार–विचार एवं चर्या के सूत्रधार होते हैं। आचार्य जहाँ आगम सिद्धान्त एवं दर्शन के अध्येता होते हैं वहीं आचरण अर्थात् चारित्र के पालक एवं पालन करवाने वाले होते हैं। तीर्थंकरों की देशना का उपदेश देकर जन–जन में धर्म की भावना का उद्योत करते हैं। इस अवसर्पिणी काल के पंचमकाल में जब साक्षात् तीर्थंकर नहीं है ऐसे समय में बीसवीं शताब्दि के अनेक आचार्यों ने परम पद में स्थित होकर अनेक भव्यात्माओं का उद्धार किया है।

आचार्यों की परम्परा में चारित्रचक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर जी महाराज की परम्परा के दैदीप्यमान आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने वर्तमान युग को नई दिशा प्रदान की है। आप की चर्या से आगम और सिद्धान्त के प्रमेय सहज ही सुलझ जाते हैं। अनुकूलता में तो सभी गतिमान हो सकते हैं किन्तु विपरीतता में भी अपने निर्दोष चर्या का पालन कर और शताधिक शिष्यों को मोक्षमार्ग में लगाकर श्लाघनीय कार्य किया है। आचार्य के गुणों का प्रायोगिक दर्शन यदि कोई करना चाहे तो वह आचार्य प्रवर विद्यासागर जी की चर्या में कर सकता है। आप युगों–युगों तक इसी प्रकार जैनधर्म–दर्शन को जीवन्त बनाये रखें; ऐसी मंगल भावना के साथ आपके चरणों में कोटिशः नमोऽस्तु निवेदित करता हूँ।

सर्जक साधक आचार्य श्री

– डॉ. अशोककुमार जैन

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज आत्मसाधक तो हैं ही कुशल सर्जक भी हैं। संस्कृत, हिन्दी के अद्भुत् विद्वान्, कवि, विचारक, दार्शनिक एवं अन्वेषक–विश्लेषणकर्ता हैं। उनके लेखन, प्रवचन में गुरु गाम्भीर्य विचारों का प्रतिपादन हुआ है। उनका युवापन में सीधे मुनिदीक्षा ग्रहण करना आश्चर्यजनक था किन्तु उन्होंने जिस निष्ठा से अपने मुनि पद और जीवन का निर्वाह किया है; वह अप्रतिम है। उन्हें देखकर कोई भी कह सकता है–"गुरु हो तो ऐसा।"

वे मेरे द्रोणाचार्य मैं उनका एकलव्य

– प्रतिष्ठाचार्य पं. पवनकुमार जैन 'दीवान'

प्रातः स्मरणीय संतशिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज इस पंचमकाल (कलिकाल) के जीवन्त चलते फिरते भगवान् हैं। हमने साक्षात् महावीर को नहीं देखा किन्तु महावीर की प्रतिकृति के रूप में आचार्य श्री को देख रहा हूँ। सर्वप्रथम दर्शन अपने जीवन में मैंने सन् 1986 में किये थे। जब उनका प्रथम बार ललितपुर में नगरागमन हुआ था। क्षु. गुणसागर जी (वर्तमान आचार्य श्री ज्ञानसागर जी) के मंगल सान्निध्य में प्रथम न्याय विद्या वाचना सम्पन्न हुयी थी, उस उसी दिन मेरा मध्याह्न काल में एम.ए. संस्कृत का प्रश्न पत्र था। यद्यपि प्रश्न पत्र देने का मन नहीं था किन्तु स्व. पं.श्री दरबारीलाल जी कोठिया की प्रेरणा से परीक्षा देने गया और द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। लगभग डेढ़ वर्ष के अन्तराल में आचार्य श्री की तीन वाचनायें ऐतिहासिक रूप से सम्पन्न हुयी। मैं आचार्य श्री के संघस्थ साधुवृन्दों–ऐलक–क्षुल्लकादि के सम्पर्क में स्वाध्यार्थ संदर्भ हेतु प्रायः ग्रंथ उपलब्ध कराता था। तब से आचार्य श्री के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा मेरे अन्तस में है। प्रातः जागरण एवं नित्यमह अर्चन एवं रात्रि में शयन के पूर्व प्रथम वंदना–नमन उन्हें कर लेता हूँ। यद्यपि उनका प्रत्यक्ष दर्शन जब कभी कभार निमित्त वशात् होता है। लेकिन मेरे मन मंदिर की हृदय वेदिका पर वे सदैव विद्यमान है और अंतिम श्वास तक रहेंगे। ऐसी मेरी दृढ़ आस्था है। सम्प्रति मैं तो इतना ही कहूँगा कि–

श्रद्धा तुम चरणों में इतनी, जितना सागर में पानी है।
विद्यासागर महाराज हमारे, अतिज्ञानी अरु ध्यानी हैं।।
वो शब्द नहीं हैं पास हमारे, जिनसे तव गुणगान करूँ।
हे महावीर की प्रतिकृति, मैं सदा तुम्हारा ध्यान करूँ।।
जिये हजारों साल गुरुवर, ये शुभ भाव हमारा है।
हे विद्यासागर आचार्य प्रवर, सौ सौ नमन हमारा है।।

फूल फलों से ज्यों लदें घनी छांव के वृक्ष।
शरणागत को शरण दे, श्रमणों के अध्यक्ष।।
आत्म विजय जिसने किया, इच्छाओं को रोक।
उन विद्या के सागर को, पूजे सारा लोक।।

जैन धर्म के सातवें तीर्थंकर भगवान् श्री सुपार्श्वनाथ जी

– डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन

धर्म तीर्थ के प्रवर्त्तक सप्तम तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ भगवान् हम सबके परमाराध्य हैं। धातकीखण्ड के पूर्व विदेह क्षेत्र में सीता नदी के उत्तर तट पर सुकच्छ नामक देश के क्षेमपुर नगर के राजा नन्दिषेण ने राज्यभोग के उपरान्त संसार से विरक्त हो अपने धनपति नामक पुत्र को राजा पद पर अधिष्ठित कर श्री अर्हन्नन्दन मुनि का शिष्यत्व ग्रहण किया और सोलहकारण भावनाओं का अनुचिन्तन करते हुए तीर्थंकर नामकर्म का बंध किया और आयु के अन्त में संन्यास–मरण कर मध्यम ग्रैवेयक के सुभद्र नामक मध्यम विमान में अहमिन्द्र पद प्राप्त किया।अहमिन्द्र पद के अनुरूप सुखभोग के साथ उस जीव ने आयुपूर्ण की।

श्री सुपार्श्वनाथ जी भगवान, भोजपुर- म.प्र.

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र की काशी देशस्थ बनारस (वाराणसी) नामक नगरी में राजा सुप्रतिष्ठ राज्य करते थे। उनकी रानी पृथिवीषेणा ने भाद्रपद शुक्ल षष्ठी के दिन विशाखा नक्षत्र में सोलह शुभ स्वप्न देखे जिनका फल राजा ने बताया कि तुम तीर्थंकर बालक की माता बनोगी। इस तरह वह अहमिन्द्र रानी पृथिवीषेणा के गर्भ में आया। उस दिन गर्भकल्याणक महोत्सव मनाया गया।

नौ माह व्यतीत होने पर ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी के दिन अग्निमित्र नामक शुभयोग में उस गर्भस्थ शिशु ने जन्म लिया। सौधर्म इन्द्र ने देव परिकर के साथ ऐरावत हाथी पर विराजमान कर उस बालक को सुमेरु पर्वत पर ले जाकर पाण्डुक–शिला पर विराजमान कर क्षीरसागर के जल से 1008 कलशों से अभिषेक किया और सुमेरु पर्वत के मस्तक पर जन्मकल्याणक महोत्सव मनाया, उनके चरणों में अपने मस्तक झुकाये और 'सुपा नामकरण किया। तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र के बाद नौ हजार करोड़ वर्ष बीत जाने पर भगवान् सुपार्श्वनाथ का जन्म हुआ था। उनकी आयु भी इसी अन्तराल में सम्मिलित थी। उनकी आयु बीस लाख पूर्व की थी। शरीर की ऊँचाई दो सौ धनुष थी। वे अपनी कान्ति से चन्द्रमा को लज्जित करते थे। श्री सुपार्श्वनाथ के कुमारकाल के जब पाँच लाख पूर्व व्यत हो गये तब उन्होंने साम्राज्य का अधिपति बनने स्वीकार किया और प्रजा के हित का ध्यान रखा। इन्द्र उन्हें निरंतर सुखी रखता था। ऐसा कोई संसार में सुख नहीं था जो उन्हें प्राप्त नहीं हुआ। वे मति, श्रुत और अवधिज्ञान के धारी थे। प्रियंगु पुष्प के समान उनकी कांति थी। उनका चिन्ह नन्द्यावर्त था। उनके शरीर की ऊँचाई 200 धनुष थी। उन्होंने वैवाहिक जीवन व्यतीत किया। आचार्य श्री गुणभद्र ने लिखा है कि–

ततोऽस्य भोगवस्तूनां साकल्येऽपि जितात्मनः।
वृत्तिर्नियमितैकाभूदसंख्यगुणनिर्जरा।।53/36।।

अर्थात् यद्यपि उनके भोगोपभोग की वस्तुओं की

वाणी को वीणा बनायें, बाण नहीं।

प्रचुरता थी तो भी वे अपनी आत्मा को अपने वश में रखते थे। उनकी वृत्ति नियमित थी तथा असंख्यात गुणी निर्जरा का कारण थी।

अपनी आयु के बीस पूर्वांग कम एक लाख पूर्व शेष रह गये तब एक दिन ऋतु का परिवर्तन देख श्री सुपार्श्वनाथ के मन में यह विचार आया कि संसार के समस्त पदार्थ नश्वर हैं। अविनश्वर तो आत्मा ही है। अतः आत्मसाधना करना चाहिए। उनके इस विचार का लौकांतिक देवों ने समर्थन किया और भगवान् की स्तुति की।

श्री सुपार्श्वनाथ मनुष्यों तथा देवों द्वारा उठायी गयी मनोगति नामक पालकी में आरूढ़ होकर सहेतुक वन में गये और वहाँ ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी के दिन सायंकाल, विशाखा नक्षत्र में बेला का नियम लेकर एक हजार राजाओं के साथ मुनि के रूप में दीक्षित हो गये। उसी समय उन्हें मनःपर्यय ज्ञान उत्पन्न हो गया।

दीक्षा के दूसरे दिन मुनि सुपार्श्वनाथ ने चर्या हेतु सोमखेट नामक नगर में प्रवेश किया। वहाँ श्री महेन्द्रदत्त नामक राजा ने पड़गाह कर उन्हें आहार दान दिया। इस दान के फल स्वरूप देवों ने उनकी पूजा की और पात्र तथा दाता की प्रशंसा की।

मुनिश्री सुपार्श्वनाथ छद्मस्थ अवस्था में नौ वर्ष तक मौन रहे। उसके बाद उसी सहेतुक वन में दो दिन के उपवास का नियम लेकर शिरीष वृक्ष के नीचे ध्यानारूढ़ हुए। वहीं फाल्गुन कृष्ण षष्ठी के दिन सायंकाल के समय विशाखा नक्षत्र में उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। देवों ने केवलज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया और भगवान् की पूजा की। वे केवलज्ञान प्राप्ति के बाद धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करने के लिए समोशरण के मध्य विराजमान हुए। वे बल आदि 95 गणधरों से युक्त थे। 2,030 पूर्वधारियों के अधिपति थे। 2,44,920 शिक्षक उनके साथ रहते थे। 9,000 अवधिज्ञानी उनकी सेवा करते थे। 11,000 केवलज्ञानी उनके सहगामी थे। 15,300 विक्रियाऋद्धि के धारक उनकी पूजा करते थे। 9,150 मनःपर्ययज्ञानी उनके साथ रहते थे और 8,600 वादी उनकी वंदना करते थे। इस प्रकार वे सब मिलाकर 3 लाख मुनियों के स्वामी थे। उनके समोशरण में 3,30,000 आर्यिकाएं, 3 लाख श्रावक, 5 लाख श्राविकाएं, असंख्यात देव–देवियां, तथा संख्यात तिर्यंच धर्म श्रवण करते थे। उन्होंने अपने श्री विहार से सम्पूर्ण प्राणियों को हितोपदेश दिया।

आयु का एक माह शेष रहने पर सर्वज्ञ श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर सम्मेदशिखर पहुँचे। वहाँ एक हजार मुनियों के साथ प्रतिमा योग धारण किया और फाल्गुन कृष्ण सप्तमी के दिन विशाखा नक्षत्र में सूर्योदय के समय निर्वाण प्राप्त किया। सम्मेद शिखर का वह निर्वाण स्थान प्रभासकूट के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मनुष्यों तथा देवों ने उनका निर्वाणकल्याणक महोत्सव बनाया। आचार्य श्री गुणभद्र ने लिखा है कि–

कृतपंचमकल्याणाः कल्पपुण्याः सुरोत्तमाः।
निर्वाणक्षेत्रमत्रेति परिकल्प्यागमन् दिवम्।।

अर्थात् पुण्यवान् कल्पवासी उत्तम देवों ने निर्वाण कल्याणक मनाया तथा 'यहाँ निर्वाण क्षेत्र है', इस प्रकार सम्मेदशिखर को निर्वाण क्षेत्र घोषित कर स्वर्ग की ओर प्रयाण किया।

हम तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ भगवान् की स्तुति इस प्रकार करते हैं–

दुर्वारां दुरितोरुशत्रुसमितिं निष्पन्नधीर्निष्क्रियन्।
तूष्णीं युद्धमधिष्ठितः कतिपयाः काष्ठाः प्रतिष्ठां गतः।।
निष्ठां दुष्टतमां निनाय निपुणो निर्वाणकाष्ठामितः।
प्रेष्ठो द्राक्कुरुताच्चिरं परिचितान् पार्श्वसुपार्श्वः स नः।।

अर्थात् बुद्धिमान् और निपुण जिन सुपार्श्वनाथ भगवान् ने दुःख से निवारण करने के योग्य पाप रूपी बड़े भारी शत्रुओं के समूह को निष्क्रिय कर दिया, मौन रखकर उसके साथ युद्ध किया, कुछ काल तक समवशरण में प्रतिष्ठा प्राप्त की, अत्यन्त दुष्ट दुर्वासना को दूर किया और अन्त में निर्वाण की अवधि को प्राप्त किया, वे श्रेष्ठतम भगवान् सुपार्श्वनाथ हम सब परिचितों को चिरकाल के लिए शीघ्र ही अपने समीपस्थ करें।

तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ भगवान् की जन्मस्थली वाराणसी में भदैनी मोहल्ले में गंगा नदी के किनारे स्थित है। वहाँ भव्य मन्दिर बना हुआ है। मन्दिर के नीचे श्री स्याद्वाद महाविद्यालय संचालित है जिसे पूज्य क्षुल्लक श्री गणेशप्रसाद वर्णी जी ने स्थापित किया था। सभी महानुभावों को तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ भगवान् की जन्मस्थली के दर्शन के साथ–साथ महाविद्यालय का भी अवलोकन करना चाहिए। वहाँ का सरस्वती भण्डार अनुपम है।

स्वाध्याय करने से साधना में निखार आता है।

मानव मूल्यों की उद्भावना का आध्यात्मिक पर्व : चातुर्मास

- डॉ. नीलम जैन, पुणे

नगर में चातुर्मास का होना, संतों की आराधना एवं प्रतिपल चरण सामीप्य से जीवन मंगल आनन्द और शांति की तरंगों से आपूरित हो जाता है, सर्वत्र एक उत्सव बन जाता है। सदाचरण और सत्याचरण का प्राधान्य घरों की देहरी पर मंगल कलश, पहगाहन कलश स्थापित करने हेतु आतुर हो जाता है। यह मंगल अवसर जीवन में कैसे मंगल परिवर्तन ला सकता है? कैसे हम इस पवित्र समय से स्वयं को प्रकाशित कर सकते हैं? कैसे हम संस्कृति से अभिन्नता का आदर्श स्थापित कर सकते हैं और कैसे श्रावक और साधु का एकीकरण धर्म प्रभावना का ऐतिहासिक कीर्तिमान बना सकता है।

सर्वप्रथम चातुर्मास किसी ग्रुप विशेष, किसी स्थान विशेष का न होकर सम्पूर्ण समाज का होता है और इसी से सामाजिक सौहार्द की सृष्टि होती है, शांति और सुमति का निवास होता है, पारस्परिक व्यवहार में सरसता और सहृदयता की मिठास घुलती है, संतों के दर्शन से मन की कुटिलता, शठता तथा मानसिक विकार नष्ट हो जाता है स्वभाव में ऋजुता तथा सरलता आती है, वृत्तियां शांत और स्थिर होती है, इच्छाएं स्वस्थ एवं निर्विकार हो जाती है, उपदेश एवं उनकी चर्या में सहभागी बनने से जीवन पवित्र बनाया नहीं जाता, वह बन जाता है; मार्ग दिखाया नहीं जाता, वह देख लिया जाता है, जीवन में आदर्श स्वतः ढल जाते हैं।

साधु कुशल वैद्य के समान उस समाज के आवश्यकता रूपी रोग का निदान जानकर अनुकूल उपदेश-औषधि देते हैं, अभय की संस्थिति देते हैं, मानवीय मूल्यों के उत्कर्ष एवं मानव जीवन की धन्यता का महत्व भी समझाते हैं। संतों का संग भाग्यशाली को ही मिलता है। पं. आशाधर जी ने मुनियों को 'धर्मवीर रसिक' कहा है। विशेषता है संत विषमता में समता और दुष्टों को भी सज्जन बनाने में प्रणम्य भूमिका निर्वहण करते हैं, कहते हैं -

'संत संगत मुद मंगल मूला
सोई फल सिद्धि सब साधन फूला
सठ सुधरहिं सत संगति पाई
पारस परस कुधातु सुहाई।'

लौकिक और पारलौकिक दोनों दृष्टि से गुरु कल्याण मार्ग प्रशस्त करते हैं। न जाने कितने पौराणिक आख्यान उपलब्ध हैं जब गुरु की सेवा मात्र से उनका जीवन परिवर्तित हो गया और उनके लिए सांसारिक सुखों और मोक्ष सुख का उनके लिए सांसारिक सुखों और मोक्ष सुख का भास्वर मार्ग प्रशस्त हुआ। समाज की पहचान, महत्व, प्रभाव और शोभा शील समन्वित आचरण ही होता है। जब हम विपथ पर होते तो एक मात्र ये महापुरुष ही वह सामर्थ्य रखते हैं अपने स्वरूप और दिव्य वाणी से जो हृदय परिवर्तन किया करता है। शीलगत आचरण ही व्यक्तित्व का प्रातिमानिक नैतिक धरातल होता है यह मानसिक विभूतियों का प्रकाश है। यह आचरण ही समाज में उन मर्यादाओं की स्थापना करता है जिनसे धर्म का स्वरूप निर्मित होता है। संतों का जीवन ऐसे ही सद्गुणों शील से अनुप्राणित होता है। वही साक्षात धर्म का दिग्दर्शन करता है ऐसे धर्मधुरीय व्यक्ति जब नगर में हों तो हमारा दायित्व है हम अपना कर्तव्य निर्धारित करें कि वह सामाजिक व्यवस्थाओं में तन-मन-धन से क्या सहयोग दे सकते हैं? गुरु व धर्म प्रभावना के आयोजित कार्यक्रमों में सद्भावना से सम्मिलित हों। वैयावृत्ति, आहारचर्या विहार आदि में सम्मिलित होने का तत्पर रहें। प्रमाद न करें। पूरे परिवार को चातुर्मास में अपनी दिनचर्या को ऐसी व्यवस्थित करनी चाहिए कि वह चिंतन करें कि सौभाग्य से जीवन में ऐसा अवसर मिला है। गृहस्थिक कार्य तो सदा सर्वदा करते ही हैं।

इन चार माह में भी उत्साह एवं दायित्व समझते हुए अपने कल्याण लिए स्वयं के अन्दर सद्गुणों के विकास के लिए धार्मिक क्रियाएं करें। संयममय आचरण रखें। कुछ नियम लें और समरसता के गौरव स्तम्भ बनें। जब तक हम अपने सात्विक संस्कारों का स्वर्णिम ढक्कन अनावृत्त नहीं करते, तब तक जीवन में मंगल प्रभात का प्रारम्भ नहीं होता।

अतः यदि सौभाग्य अपने नगर में संतों के चातुर्मास का गौरव प्राप्त कर रहा है तो इस सौभाग्य को इतना दीप्तिमान और प्रशस्त कर लें कि सदा-सदा के लिए जीवन को धन्य कर लें।

सामयिक पावन प्रसंग

विचारों की महिमा

एक कल्पवृक्ष था। उसके नीचे बैठकर आदमी के मन में जो बात आती, वह झट पूरी हो जाती।

एक दिन एक आदमी उसके नीचे आकर बैठा। उसे बड़े जोर की प्यास लगी थी। उसके मन में आया कि अगर यहां पीने का ठण्डा पानी मिल जाता तो बड़ा अच्छा होता। विचार आने की देर थी कि एक घड़ा ठण्डा पानी आ गया। उस आदमी ने जी भरकर पानी पी लिया।

थोड़ी देर में उसे भूख लगी। उसने सोचा कि अगर यहां खाना भी मिल जाने पर बड़ा अच्छा होगा।

इतना सोचते ही भोजन से भरी थाली आ गयी। उस आदमी ने डटकर भोजन किया। पेट तनकर भर गया, तो उसे आलस आने लगा। वह सोचने लगा कि अगर यहां सोने का कुछ प्रबंध हो जाय तो वह थोड़ी नींद ले ले।

तत्काल एक पलंग आ गया। वह उस पर लेट गया।

अचानक एक नया विचार उसके मन में उठा- यह सुनसान जगह है। अगर कोई भूत आ गया, तो मुझे खा जाएगा।

इतना सोचता था कि भूत आ गया और उसे खा गया।

विचारों की बड़ी महिमा है। हमें चाहिए कि अच्छे विचार ही मन में आने दें।

(नैतिक कथाएं-यशपाल जैन) से साभार.

(पू. आचार्यश्री विद्यासागर जी का 47वाँ मुनि दीक्षा दिवस-)

और विद्याधर के भीतर का मुनित्व प्रकट हो गया

- सुरेश जैन सरल

अब से लगभग अर्द्ध सदी पूर्व अजमेर नगर की पावन-धरती पर घटित यह श्रेष्ठ-प्रसंग पढ़ते हुए लगा कि मैं पढ़ नहीं रहा, सब कुछ समक्ष देख रहा हूँ। प्यार से निहार रहा हूँ। दीक्षा का ऐसा सहृदय-दृश्य श्री सरल जी की लेखनी से ही पाया जा सकता है। अत: 'जैन तीर्थ वंदना' पत्रिका के सुधी पाठकों के लिए अविकल प्रस्तुत है। - सुधीर जैन, अध्यक्ष

मुनीन्द्र प.पू. ज्ञानसागरजी को 'विद्या' के साथ-साथ उनकी श्रेष्ठ चर्या भी प्रभावित करने लगी थी। कठिन तपस्या, स्व कर से स्व केश लुंचन, मुनियों जैसे व्रत-उपवास की स्वीकृति और निर्विघ्न। एक चटाई पर रात निकालने का संकल्प, उदासीन भाव, गुरुसेवा की ललक पिच्छिका बनाने की कला, श्रावकों से सन्त सीमित वार्तालाप, अनेक महत्वपूर्ण और साधुत्वोचित लक्षण देख कर उन्हें लगा कि शिष्य को वस्त्र भार से मुक्त कर शिव-पथ पर आरूढ़ कर देना चाहिए। (उस समय पू. ज्ञानसागरजी मुनि थे और उनकी उम्र 77 वर्ष हो चुकी थी)

उसी माह में ही, मुनीन्द्र प.पू. ज्ञानसागरजी के अनेक भक्तों ने पूछा- गुरुवर! अब ब्र. जी को दीक्षा कब दे रहे हैं? गुरुवर ऐसे प्रश्नों के उत्तर न देते थे, मौन रखते थे, पर उस दिशा में सोचना द्विगुणित कर देते थे। धीरे-धीरे एक दो पंडितों और एक दो श्रेष्ठियों तक चर्चा गई, फिर पंडितों और श्रेष्ठियों ने गुरुवर से चर्चा की।

चर्चाओं का क्रम इतना बढ़ गया कि कुछ जन कहते कि दीक्षा देने में क्या आपत्ति? चाहे जब दे सकते हैं तो कुछ जन बोले- अभी ब्र. जी युवक हैं, पहले क्षुल्लक दीक्षा उपयुक्त रहेगी, फिर बाद में अन्य पदों की दीक्षायें।

सबकी बातें सुनने के बाद, मुनीन्द्र गुरुवर ज्ञानसागरजी ने समाज को अपना निर्णय सुना दिया- 30 जून 68 को विद्याधर को मुनि दीक्षा प्रदान की जावेगी (तदनुसार आषाढ़ शुक्ल पंचमी, वि. सं. 2025)

श्री भागचन्द सोनी, समाज प्रमुख, ने सीधी मुनि दीक्षा की बात सुनी तो गुरुवर को समझाने का सविनय प्रयास करने लगे। समय की खोज में थे कि कब बात करें उनसे।

विद्याधर को दीक्षा आदि का संकल्प-विकल्प मन में नहीं था, वे अध्ययन के बाद गुरु सेवा में लग जाते थे। गुरुवर को गठियावात का कष्ट था, विद्या उनके जोड़ों को सहलाते रहते, कभी हाथ की कोहनियों पर हल्का मर्दन करते तो कभी पैरों के घुटनों पर। कभी कमर दबाते रहते तो कभी तलवों को। श्रद्धा से सनी हुई हथेलियों का स्पर्श चुपचाप ही मुनीन्द्र गुरु ज्ञानसागर से वह वार्ता कर लेता जो विद्या के अधर न कर पाते।

कई बार मुनीन्द्र ज्ञानसागरजी को लगता कि विद्या के स्पर्श में जादू है, जहाँ हाथ धर देता है, वहाँ का दर्द चला जाता है। सत्य तो यह है कि वे प्रिय शिष्य के सेवा भाव से चकित हो पड़े थे, कहते- तू वैद्य बनकर आया है मेरी देख-रेख के लिए? कैसे सीखा तूने वैयावृत्ति का वह वेदना-निग्रह-गुण। वे महान ज्ञानी मुनि रोज-रोज विद्या के स्पर्श में सेवा, आदर, श्रम, कर्मठता, विनम्रता, लगन, निष्ठा और निष्कपटता के मंगलभावों की पड़ताल करते चल रहे थे।

भागचंदजी एक जागृत श्रावक थे। चिंतन के धनी थे। समाज सेवा में अग्रणी। मुनि सेवा में समर्पित। समय पाकर एक दिन गुरुवर के कक्ष में मित्रों सहित जा पहुंचे, नमोऽस्तु के बाद निवेदन किया- गुरुवर आप प्रकांड विद्वान हैं, महातपस्वी हैं, निर्विकार निर्ग्रन्थ हैं, मात्र 22 वर्ष की उम्र के युवक को मुनि पद की कठिन डगर पर क्यों डाल रहे हैं? पहले क्षुल्लक बनाइये, चर्या देखिये, फिर आगे के लिये सोचिये।

गुरुवर अपनी गुरु गम्भीर वाणी में बोले- मैंने उस युवक को परख लिया है, वे मुनिचर्या में सफल भर न होंगे, बल्कि मुनिपद की गौरव-गरिमा भी बढ़ायेंगे।

भागचंदजी हाथ जोड़कर कहने लगे- अभी कुछ वर्ष मुनि दीक्षा न दीजिए।

- क्यों? पूछ बैठे गुरुवर।

- उम्र और अनुभव कम है।

- मुनिपद के लिए क्या उम्र होना चाहिये, क्या अनुभव होना चाहिये? कहीं कोई अर्हतायें लिखी हों तो बतलाइये?

- जी यह तो नहीं मालूम, पर हमारा मन कहता है कि ...

- मन के कहने पर चल रहे हैं आप? जो देख रहे हैं, जो जीवन का यथार्थ है, उसके कहने पर कब ध्यान देंगे?

- बस दो -चार वर्ष के लिये ही रोक रहा हूँ।

- क्यों?

- अभी उम्र कच्ची है।

- कच्ची और पक्की उम्र वर्ष या पल-छिन से नहीं बनती, वह आत्मतैयारी से बनती है। भीतर की परिपक्वता से।

- गुरुवर, हम दो चार लोग नहीं, सारा समाज कह रहा है कि उम्र अभी कच्ची है।

- हम त्यागीजन, समाज को नहीं, आगम को कसौटी मानते हैं।

- तो भी महाराज, पहले उन्हें साल दो साल के लिये क्षुल्लक या वर्णी जी के पद पर रखिये।

स्वाध्याय करने से साधना में निखार आता है।

श्रेष्ठियों की वार्ता से क्षोभ हो आया गुरुवर को। पर वे महान ज्ञानी संत उसे मन ही मन दबा गये, फिर वात्सल्य गंगा उलीचते हुए बोले सम्मुख बैठे प्रमुखों से- कोई मुमुक्षु कोई जिज्ञासु, कोई श्रावक मेरी या आपकी इच्छा से वर्णी/क्षुल्लक ऐलक/मुनि बने- यह संभव नहीं है, शुभ नहीं है, प्राकृतिक नहीं है। कोई व्यक्ति मुनि :बनता' नहीं, हो जाता है।' मैं उसे 'ना' नहीं रहा, वह 'हो' रहा है। मुन्यवस्था धारण कर रहा है। मैं तो निमित्त मात्र हूँ। आपकी बातें 'मैं' नहीं मान सकता, मैं मान भी जाऊँ तो 'उसे' आपका कहना मानने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। तपसी गण तप का भाव अपनी क्रियायें देखकर ही बनाते हैं, वे बाह्यतत्व पर सोचने या रुकने को विवश नहीं हैं। यदि उनके भीतर मुनि-अवस्था धारण करने का दृढ़ संकल्प है तो मैं या आप क्या, पूरा देश उन्हें नहीं रोक सकता। वह अपनी साधना के बल पर देश के किसी भी मंदिर में मुनि-अवस्था धारण करने के लिए स्वतंत्र है। फिर मैं या आप बाधा क्यों बनें?

- ठीक है, महाराज! जैसा आप उचित समझें, किन्तु पात्र की दृढ़ता?

- देख ली मैंने। तपस्वी के संकल्पों की तरह दृढ़ है वह और उसकी पात्रता।

- आपके पास आये उन्हें मात्र ग्यारह माह हुए हैं, सो ताड़ना, प्रतापड़ना, परीक्षण, अवलोकन भी तो आवश्यक है?

- मुनीन्द्र ज्ञानसागरजी मुस्कराये, फिर बोले- वह सब कर चुका हूँ। पुष्प-सा कोमल दीखनेवाला वह युवक भीतर से कड़ा और स्वावलम्बी है, निजाश्रित है। उसे सुकोमल ही न मानते रहिये, वह कंटक की तरह कड़ा भी है- धर्म, चारित्र और तप के कठिन आवरण में भिद सकता है। आँधी आने पर फूल-सा झर तो समता है, पर उसे देख डर नहीं सकता।

श्रेष्ठिगण अपने तर्क रख रखकर थक गये। पगड़ी के नीचे से विद्वता पसीने की तरह बह कर चेहरे पर आ गई, पर दीक्षा कार्य को स्पष्ट सम्मति न दे सके, वे समय के हस्ताक्षर कहे जाने वाले समाजसेवी। अधखिले चेहरे बनाये हुए, हट गये गुरुवर के समीप से। लस्त-पस्त। खिन्न-भिन्न। बिफरे-बिफरे। अशांत। लौट आये निज गृहों को, निवासों कोठियों-महलों को, जहाँ सुख था, स्वर्ण था, सुखाद्य था, सुनाद्या था, संगीत था, सुगीत था, सुविधा थी, सुमुखि थी। थे नहीं तो तप, त्याग, संयम। न था आकिंचन्य का सु-भाव। न था तपस्वी-स्वभाव।

गुरुवर के शब्द समाज में नव-प्रेरणा का संचार कर सके, फलतः दूसरे दिन से बालाबाल नर-नारियों में भारी उत्साह जाग गया, यह जान कर कि विद्याधर को मुनिदीक्षा दी जावेगी।

जो श्रेष्ठिजन थक कर लौटे थे, दूसरे ही दिन उनके विवेक ने प्रभाव दिखाया और निर्मल मन से गुरुवर के समीप आ गये- व्यवस्थाओं के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करने।

एक भव्य-आत्मा के पुण्योदय से समूचे नगर में पुण्य संचार हो पड़ा था। हर आत्मा में आनंद और उत्साह था। हर व्यक्ति धर्म-कार्य के लिये समर्पित।

गुरुवर की आज्ञा से एक दिन का उत्सव सात दिनी महोत्सव बन गया। सो 25 जून, 68 को सेठ मिश्रीलाल मीठालालजी की ओर से पहली बिन्दोरी निकाली गई। शाम के समय युवक विद्याधर को राजकुमारों की तरह सजाया गया। कीमती वस्त्र । स्वर्ण अलंकर / मुकुट। गाजे-बाजे, रथ, बघ्घी, विद्युत सज्जा। जैसे राजा के बेटे को दूल्हा बनाकर निकाला गया हो बारात के साथ। (उसके पूर्व 22 जून से 24 जून तक बाल आश्रम दिल्ली के कलाकारों के कार्यक्रम सम्पन्न कराये जा चुके थे)

समाज के आग्रह पर तब तक उदयपुर से पं. बाबूलाल जामदार और आगरा से सुयोग्य श्रावक सेठ सुनहरीलाल भी पहुंच चुके थे। सात दिवसीय कार्यक्रमों के अंतर्गत उनके प्रवचनों ने अजमेर नगर में भारी धर्म-प्रभावना की। प्रभावना ऐसी थी कि नसियाजी का वह कार्यक्रम समूचे अजमेर नगर का कार्यक्रम बन गया था। हर मुहल्ले, कालोनी के श्रावक भारी संख्या में उपस्थित हो रहे थे। हरक्षेत्र के प्रमुख जन एकता से कार्य कर रहे थे, मिल कर परस्पर। कुछ नाम सदा उल्लेखनीय रहेंगे- सर्वश्री धर्मवीर सेठ भागचंद, छगनलाल पाटनी, कजौड़ीमल, श्री स्वरूपचंद कासलीवल, श्री प्राचार्य निहालचन्द बड़जात्या, पदमकुमार जैन (फोटोवाले), पदमकुमार जैन एडवोकेट, किशनलाल जैन, मिलापचंद पाटनी, ताराचन्द पाटनी, कैलाशचन्द पाटनी, श्रीपंत जैन, माधोलाल गदिया, कमल बड़जात्या, विद्याकुमार सेठी, महेन्द्र बोहरा, हुकमचन्द लुहाड़िया आदि के नाम कभी नहीं भुलाये जा सकते।

कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने में स्थानीय संगीत मंडल, जैन वीर दल, जैसवाल जैन स्वयं सेवक दल, अग्रणी रहे।

श्रेष्ठिगण विन्दोरी निकालने का प्रस्ताव लेकर मुनीन्द्र प.पू. ज्ञानसागरजी को घेरे हुए थे, मुनीन्द्र ज्ञानसागरजी भी चाहते थे कि उनके प्रज्ञावान शिष्य ब्र. विद्याधर की दीक्षा का कार्यक्रम अद्भुत बन पड़े। अतः उन्होंने श्रेष्ठियों को शेष दिनों के लिये विन्दोरी के निर्देश दे दिये। फलतः 26 जून को पुनः 7 बजे से सेठ राजमल मानकचन्द चाँदीवाला के संयोजन में भव्य विन्दोरी निकाली गई।

अजमेर की हर नई दिशा में, मार्ग में विन्दोरियाँ जा रही थीं, 27 जून को सेठ पूसालाल गदिया को संयोजन का पुण्य मिला, वे विन्दोरी को घुमाते हुए अपने निवास की ओर से ले गये थे। प्रतिदिन विन्दोरी की शोभा बढ़ाने का प्रयास किया जाता था श्रावकों द्वारा। 28 जून को सेठ मांगीलाल रिखबदास (फर्म नेमीचंद शांतीलाल बड़जात्या) के भाग्य जागे, उस दिन का संयोजन मुनीन्द्र प. पू. ज्ञानसागरजी के निर्देश से उन्हें मिला था। उन्होंने भी शोभा में बढ़त लाने के लिये मित्रों से चर्चा की, चर्चा मुनीन्द्र प. पू. ज्ञानसागरजी तक पहुंच गई, तब मुनिवर ने मुस्कराकर बतलाया- 'राजकुमार तो हाथी पर चलते थे, तुम्हारे राजकुमार किस साधन पर चल रहे हैं?'

लोगों को संकेत समझने में देर न लगी, वे बेचारे तो विद्याधर के 'सवारी-त्यागी' के कारण अभी तक हाथी नहीं लाये थे, जब मुनिवर से संकेत

मिल गया तो उस शाम विन्दोरी के समय राजकुमार विद्याधर को, सजाने के बाद, सुसज्जित हाथी पर बैठाया गया। पगड़ी बाँधे हुए ब्रह्मचारी जी उस दिन और अधिक खिल रहे थे। सड़कों पर तोरण द्वार उनका स्पर्श पाकर धन्य होते तो घरों के द्वारों-दरवाजों पर श्रावकों द्वारा समायोजित आरतियों से श्रावकों के मन और मकान धन्य हो रहे थे। जुलूस लाखनखेड़ी की ओर बढ़ता चला जा रहा था। प्रभावना इतनी बढ़ी कि श्वेताम्बर भी ब्रह्मचारीजी के स्वागत और आरती कर उपकृत हुए थे।

29 जून को समस्त दिगम्बर जैन जैसवाल पंचायत केशरगंज के संयोजन में विद्याधर की विन्दोरी भव्यता से निकली। हजारों व्यक्तियों के मध्य वह असरदार युवक समाज का सरदार बन कर, जब हाथी पर बैठा तो लोगों के मन नाच उठे। लगा हर डगर पर पुण्य के मयूर नर्तन कर रहे हैं। उस दिन विद्याधर के तन पर वस्त्राभूषण और मुकुट नहीं थे, वे मात्र धोती दुपट्टे में ही भव्य दिख रहे थे। वे वीतरागी मुद्रा के समीप थे।

अभी तक की सभी विन्दोरियाँ शाम को आयोजित की जाती रहीं, परन्तु 30 जून 68 की ऐतिहासिक विन्दोरी प्रातः साढ़े सात बजे निकाली गई थी। उस तिथि में विद्याधर को दीक्षा मिलने वाली थी, उस दिन संयोजन का सौभाग्य मिला था- सेठ हुकमचंद नेमीचंद दोशी को। सारा अजमेर उमड़कर इकट्ठा हो गया था, लाख से अधिक बालाबाल नर-नारी मुनीन्द्र प.पूज्य ज्ञानसागरजी और उनके शिष्य के दर्शन करने पहुँचे थे। नगर के साथ-साथ अन्य नगरों प्रान्तों से पहुँचे हुए भक्तों की संख्या भी बहुत अधिक हो गई थी। शोभायात्रा निकली। लाखों नेत्रों में समा गई। विद्याधर हाथी पर बैठे मुस्करा रहे थे। दाढ़ी और मूछ के बीच उनके दंतावलि की शुभ्रता मुनियों के मन का परिचय दे रही थी- धवल निर्मल श्वेत।

विद्वत्जन जानते थे कि युवा सम्राट क्यों मुस्करा रहे हैं? वे नादान नहीं हैं कि हाथी पर बैठने के उपलक्ष्य में मुस्करायें। वे बच्चे नहीं हैं कि राजसी पोशाक के कारण मुस्करायें। वे अलंकारों के कारण भी नहीं मुस्करा रहे थे। वे उस दिन सबसे न्यारे-प्यारे दीख रहे थे, इसलिये भी नहीं। वे आत्मा से उपजे सत्य के दर्शन कर मुस्करा रहे थे, वे जानते थे कि यह रूप, श्रृंगार, पोशाक, अलंकार, मुकुट, मुद्रिकायें सब क्षणिक हैं। जब ये सब इस शरीर से विलग हो जावेंगे, तब मिलेगा सच्चा रूप। वे उस सच्चे रूप, दिगम्बर रूप के क्षण प्राप्त करने की प्रतीक्षा पूरी होते देख मुस्करा रहे थे। उन्हें ज्ञात था कि एक भव में भगवान महावीर ने भी अपना स्वयं का राजपाट छोड़कर शांतिघाट की ओर चरण दिये थे। विद्या का वह राजपाट-शोभा श्रृंगार तो उठाया हुआ था, अतः उन्हें इसके त्याग देने में अधिक खुशी होना स्वाभाविक ही था।

वे संसार द्वारा थोपे गये परिग्रह पर हँस रहे थे, परिग्रह के त्याग और अपरिग्रह की कामना पर खुश थे। वे 'संसार' को छोड़कर 'सार' गह लेने के क्षण हेतु मुस्कुरा रहे थे।

श्रावक उन्हें साक्षात् राजकुमार वर्धमान निरूपित कर रहे थे, किन्तु उनकी आँखों में परिव्राजक महावीर का सौम्य मुखमण्डल आकार ले रहा था। दिगम्बर महावीर का देहोजाला उन्हें दीख रहा था, देहाभा दीख रही थी।

अग्रज महावीर को अपना प्यारा भाई देवोपम दीख रहा था। वे जुलूस में शामिल होकर, जुलूस का ओर-छोर देख रहे थे। एक विशाल शोभायात्रा अजमेर के राजपथ पर फैली हुई है। अजमेर का हर चौराहा सजाया गया है। हर गली के प्रारम्भ में ही तोरण द्वार बने हैं। हर भवन पर केशरिया झंडा लहरा रहा है। एक मकान से वंदनवार चल कर दूसरे को बाँध रहा था, जैसे समाज की एकता का यथार्थ समझा रहा हो। झंडो और झंडियाँ तो गिने ही नहीं जा सकते थे। पूरा नगर मुनीन्द्र प. पू. ज्ञानसागरजी के वाक्यों से लिखित कपड़ा-पट्टियों (बैनरों) से दमक रहा था। सबसे आगे बैण्डबाजों का दल, फिर शहनाई वादकों का दल। उनके पीछे 24 सजे हुए गजराज झूमते हुए चल रहे थे। हर हाथी पर मुकुट बाँधे हुए श्रावक धर्मध्वजा फहराने का आनंद ले रहे थे।

पच्चीसवें बड़े हाथी को कुछ अधिक ही सजाया गया था, लोग उसे इन्द्र महाराज का ऐरावत कह रहे थे। उस पर युवा सम्राट शोभा बिखेर रहे थे। सम्राट के पीछे-पीछे चल रहे थे देश के अनेक प्रांतों से आये श्रावकगण। उन्हीं के माध्य हैं मनीषी साहित्यकारगण। उन सबके पीछे मातायें-बहिनें मंगलकलश लिये चल रही थीं। उनकी संख्या भी शतकों में थी। उन सबके पीछे चल रहा था लाखें श्रावकों-बाल-गोपालों का प्रभावनाकारी जुलूस। बच्चे अपने बड़ों के साथ संगमित्ति कर चल रहे थे, डर था कहीं भीड़ में छूट न जायें। कोई विद्याधर के समीप था शोभायात्रा में, कोई काफी दूर था, पर सत्य यह है कि जो जहाँ था, वह वहीं से विद्याधर के साथ था। महावीर प्रसाद जी इस दिन पहली बार समय की सुन्दरता को खुली आँखों से देख सकने में सफल हुए थे। सुबह की वह विन्दोरी काफी दूर-दूर तक घुमायी गई। शोभायात्रा की भव्यता से एक ओर जैन समाज की एकता और धर्म लगन का महान रूप सामने आया, वहीं सम्पूर्ण नगर में धर्मप्रभावना की नूतन आभा प्रदीप्त हो गई। उस दिन का अजमेर एक नया, भव्य और दिव्य नगर बन कर आँखों में समा गया था। करीब साढ़े दस बजे शोभायात्रा पूर्ण हो गई। तब तक लोगों को अमृत वचनों की प्यास हो आई, सो शोभायात्रा बदल गई धर्मसभा में। फिर श्रावकों की प्रार्थना पर ज्ञान-अवतार मुनीन्द्र प. पू. ज्ञानसागरजी ने अपने अमृत वचनों से सभी को तर कर दिया।

सुबह-सुबह सूर्य की किरणें ऊधमी बच्चों की तरह जबरन भीड़ में घुस कर विद्याधर को बार-बार छू रही थीं। बाल अरुण अपने नेत्र खोलता ही जा रहा था, किरणों की आँच से स्पष्ट होता चल रहा था। नगर के मठ, मढ़िया, मंदिर, नसिया, चैत्यालय, गुरुद्वारे, चर्च, मस्जिदें मिलकर मुस्करा रहे थे। उनके गर्भ से गूँजती घंटों की आवाजें और भक्तों की स्वर-लहरियाँ एक संदेश बार-बार दोहरा रहे थे-

'मोह कर्म को नाश, मेट कर सब जग की आशा।
निज पद में थिर होय लोक के शीश करो बासा।।'

जैन मंदिरों पर बने श्याम-पटों पर एक सप्ताह पूर्व लगाये गये पत्र-पत्रिकायें समाचार को बार-बार आँखों में ला रहे थे। नगर के समस्त दैनिक

अखबार उसी समाचार से अभिमंडित थे। प्रमुख अखबारों ने विद्याधर का सचित्र परिचय प्रकाशित कर अपना दायित्व पूर्ण किया था।

सुबह की विन्दोरी में शामिल होने की होड़ सी लग गई थी। धनिक आ रहे थे, मनीषी आ रहे थे, खास आ रहे थे, आम आ रहे थे, कर्मचारी आ रहे थे, अधिकारी आ रहे थे, जैन आ रहे थे, अजैन आ रहे थे। पृथक-पृथक परिवारों के झुण्ड आ रहे थे। कुछ बहुयें अपी वृद्धा सास का हाथ पकड़े साथ चल रही थीं। कुछ स्वस्थ-मस्त सासें अपनी नई नवेली बहुओं के घूँघट खुलवा रही थीं और उस ओर इंगित कर रही थीं- जहाँ युवा सम्राट उपस्थित थे।

पहले, एक माह पूर्व मुनीन्द्र श्री ज्ञानसागरजी का आगमन अजमेर में हुआ था, तब उन्होंने एक अन्य श्रावक को क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की थी। उस समय भी एक दृश्य बना था शहर में, मगर यह 30 जून का दृश्य को अद्भुत बन पड़ा था।

मध्याह्न दो बजे तक पुनः भीड़ उमड़ कर बाबाजी की नसिया के उद्यान में और उसके बाहर चारों तरफ एकत्र हो गई थी। उस जमाने में अजमेर जैसे विशाल शहर में दस हजार की भीड़ इकट्ठा करने में नेताओं को पसीना आ जाता था, पर दीक्षा-दिवस के दिन स्व-प्रेरणा से तीस हजार से अधिक जन उद्यान में भर गये थे तो उतने ही उद्यान के बाहर की सड़कों पर, चारों ओर खड़े थे, उतने ही जन समीपी भवनों के छतों, सीढ़ियों, द्वारों पर चढ़ कर देख लेना चाह रहे थे। अजैन श्रद्धालुओं की संख्या भी कम न थी।

जय घोषों से आकाश क्षेत्र भरता चला जा रहा था। लोग वृद्ध मुनिवर और युवा ब्रह्मचारी की एक झलक देख लेने को बेचैन थे। वह तपसी जिसके शरीर पर अभी चार धागों का एक नन्हा वस्त्र है, कुछ देर बाद उसे भी उतार फेंकेगा। उसका वह दिगम्बर रूप इतना विशाल हो जावेगा कि संसार का कोई वस्त्र उसके माप का न रह जावेगा। उसमें वह वैराट्य समाहित हो जावेगा कि तब आकाश को ही वह ओढ़ पायेगा, और पृथ्वी हो जावेगी उसका एक मात्र बिछावन। उसका वह दिगम्बर रूप इतना प्रसरणीय हो पड़ेगा कि हर दिशा में वह ही वह होगा और हरेक दिशा भी उसी से प्रारम्भ होकर उसी के पास पूर्ण हो जावेगी।

मंच, पंडाल, मैदान की सीमायें होती हैं। वहाँ नसियाजी के चारों तरफ आदमियों का ताँता लगा है, पर अब कोई पंडाल में नहीं पहुंच पा रहा है, वह धरती माता की गोद की तरह भर कर खिल उठा है। नसिया के चारों ओर फैला विशाल भू-क्षेत्र नर-मुण्डों से जैसे पट गया हो। हर गली, छत, देहलान पर आदमी ही आदमी। सब की नजरें पंडाल में निर्मित विशाल मंच पर केन्द्रित हो गई हैं।

श्री भागचन्द सोनी माइक पर आते हैं, जनमानस की बुदबुदाहट शांत हो पड़ती है, वे बोलते हैं- कुछ ही क्षणों के बाद, ज्ञानमूर्ति, चारित्र-चक्रवर्ती, वरिष्ठ मुनि-पुंगव पूज्य ज्ञानसागरजी महाराज पधारने वाले हैं, आप लोग शांति बनाये रखें।

कुछ ही पल बाद पूज्य श्री पधार गये, समीप ही बैठे विद्याधर जी। वहीं पास में श्री सोनीजी, पं. विद्याकुमारजी आदि जन विराज गये। तब तक जनता पुनः मुनिवर का जयघोष करने लगी।

सोनीजी की नसिया के उस भू-भाग पर जैसे किसी तीर्थंकर का समवशरण उतर आया हो। मंच पर एक ऊँचे आसन पर मुनीन्द्र गुरुवर मुनि ज्ञानसागरजी शोभायमान हैं, उनके साथ क्षुल्लक सन्मतिसागरजी, क्षु. सम्भवसागरजी, क्षु. सुखसागरजी एवं कतिपय ब्रह्मचारीगण। वही हैं प्राचार्य निहालचंद, श्री मूलचन्द लोहाड़िया, श्री दीपचंद पाटनी और श्री कजौड़ीमल जैन।

ब्र. विद्याधर के अग्रज सुश्रावक श्री महावीरप्रसाद जैन अष्टगे एवं उनके संबंधी श्री बुल्लूजी बदनकाय भी उस महिमावन्त मंच की शोभा में शामिल हैं- विद्या के परिवार की तरफ से।

दर्शकों का ध्यान विद्याधर के चेहरे पर है, उनकी दाढ़ी के क[illegible] सघन, चमकीले बाल युवावस्था के गोपन-संकल्पों की कहानी कह रहे थे तो सिर पर शिशुओं की झालर (नूतन बाल) की तरह हवा में लहराते घुँघराले केश जीवन की क्षण-भंगुरता का ज्ञापन प्रदान कर रहे थे।

दर्शकों का ध्यान विद्याधर के चेहरे पर है, उनकी दाढ़ी के काले, सघन, चमकीले बाल युवावस्था के गोपन-संकल्पों की कहानी कह रहे थे तो सिर पर शिशुओं की झालर (नूतन बाल) की तरह हवा में लहराते घुँघराले केश जीवन की क्षण-भंगुरता का ज्ञापन प्रदान कर रहे थे।

समाज के कर्णधारों-श्रीमानों-धीमानों ने प्रेम और वात्सल्य से सने हाथों से उन्हें (विद्याधर को) भूलोक के एक महान चक्रवर्ती सम्राट की तरह सजाया-सँवारा है। देह पर बेशकीमती रेशमी पोशाक। गले में स्वर्ण अलंकार। भुजाओं पर भुजबल प्रदर्शक सोनपट्टी। कलाई पर सोने के ब्रासलेट (पहुँचियाँ) (वर्तमान में चल रहे ब्यूटी पार्लरों की पहुँच से बाहर, उनका चेहरा उत्साही जनों ने ऐसा सजाया था जैसे इन्द्रपुरी के ब्यूटी पार्लर से कोई विशेषज्ञ आकर सजा गया [illegible] शीश पर रत्न जड़ित मुकुट से सूर्य की किरणें अठखेलियाँ कर रही थीं।

सत्य यह भी है कि जो जन्म से ही सर्वांग सुन्दर रहा हो, वह विभिन्न सजावटी पदार्थों से अत्यन्त मनोहर क्यों न दीखेगा?

संचालनकर्ता के आह्वान पर एक पाँच वर्षीय नन्हें बालक ने माइक पर आकर तोतली किन्तु मीठी आवाज में मंगलपाठ पढ़ा। फिर एक गायन मंडल द्वारा वैराग्य और संसार के वर्णन से गुम्फित मधुर गीत, स-संगीत प्रस्तुत किया गया।

गीत पूरा हुआ। ब्र. विद्याधर गुरु के समीप खड़े हो गये मंच पर, फिर हाथ जोड़ कर उनसे प्रार्थना की- 'हे सारस्वत गुरुदेव! मेरी पुकार सुनें। मैं एक नादान युवक, आपके चरणों में रह कर अपना जीवन धन्य करना चाहता हूँ, सो हे गुरुवर! मुझे दिगम्बरी-दीक्षा प्रदान करें और इस दास का परम उपकार करें।

विद्याधर की वाणी से निःसृत एक-एक शब्द को लोग पकड़-पकड़ कर कान से लगा रहे थे और उन्हें हृदय तक ले जाने का प्रयास कर रहे थे।

विद्याधर की विनय सुनकर करुणा के सागर गुरुवर ने हाथ उठाकर

आशीष दिया, तब विद्याधर आगे बोले- मैं एक सामान्य युवक हूँ। मुझसे अनेक त्रुटियाँ हुई होंगी। मैं समस्त प्राणियों से क्षमा माँगता हूँ, यहाँ उपस्थित परिचितापरिचित लोगों से क्षमा मांगता हूँ, साधु संघ से क्षमा की याचना करता हूँ, परम उपकारी गुरुवर से क्षमा चाहता हूँ।

विद्याधर द्वारा किये गये क्षमायाचना के भाव से अनेक श्रावक-श्राविकाओं की आँखें भर आई, अनेक जन रोमांचित हो गये। समग्र समुदाय अपलक नेत्रों से उन्हें और गुरुवर को देख रहा था।

विद्याधर के सारगर्भित एवं सार्वजनिक प्रवचन ज्यों ही पूर्ण हुए, वे धैर्यपूर्वक अपने स्थान पर बैठ गये और गुरुवर से प्राप्त निर्देशानुसार अपने ही हाथों से अपने केशलुंच करने लगे। वे अपनी सशक्त मुस्टिका से केशों को उखाड़ कर फेंक रहे थे, श्रावक केशों को हाथों हाथ लेकर गीली कनक पर रखते जा रहे थे। कोई मुस्टिका इतनी कड़ाई से खींचते विद्याधर कि केशों के निकलते ही रक्त बह पड़ता।

सिर के बाल, फिर दाढ़ी के बाल, फिर मूछों के बाल। पूरा चेहरा और मुण्डा रक्त रंजित हो गया।

केशलुंचन-क्रिया चल रही थी मंच पर, तब तक गुरुवर पंडितों को प्रवचन के लिये आदेश प्रदान कर देते हैं। पं. विद्याकुमार सेठी, श्री नाथूलाल वकील बूँदी, श्री के. एल. गोधा एवं पं. हेमचंद शास्त्री के वैराग्य वर्धक प्रवचन सम्पन्न हुए।

ब्र. विद्याधर के माता-पिता की ओर से सम्मति प्रदान करने एवं गुरुवर का आभार मानने, उनके अग्रज भी महावीर प्रसाद जैन एक भतीजे सहित पधारे थे। सम्बोधनों के लिये उन्हें भी माइक पर आमंत्रित किया गया, वे आये और अपने संक्षिप्त उद्बोधन से अपना मंतव्य कह गये।

अंत में समाज को श्री भागचन्द सोनी का उद्बोधन सुनने को मिला। उन्होंने गुरुवर को धन्यवाद प्रदान किया एवं दीक्षा श्रेष्ठता और सामयिकता का महत्व प्रतिपादित करते हुए, अजमेर के सौभाग्य की चर्चा की।

केशलुंच कार्य पूर्ण होते ही मुनीन्द्र गुरुवर ज्ञानसागर उनके समीप जाकर खड़े होते हैं। पंडितगण थाली में पूजादि योग्य द्रव्य लेकर पास पहुंच जाते हैं। गुरुवर दीक्षा प्रदान कर संस्कारित करते हैं, अपने हाथों से द्रव्य चढ़ाते हैं, अपने अक्षरों से मंत्रों का उच्चारण करते हैं।

गुरु का संकेत पाते ही विद्याधर वस्त्र छोड़ देते हैं। गुरुवर उनका नामकरण करते हैं- आज से आप मुनि विद्यासागर हो गये।

धूप की तपन भूल कर लोग नव-मुनि के दर्शन में लीन थे। सभी दौड़कर उनके चरण स्पर्श कर नमोऽस्तु कर लेना चाहते थे।

तब तक आकाश में उड़ रहे बादलों को लगा कि जब ये नागरिक चरण छूने की बात सोच सकते हैं तो हम तो सीधे उनका चरण प्रक्षाल कर सकते हैं। आवारा-बादलों को कौन रोक सका है? देखते ही देखते वे ऊधमी बच्चों की तरह नसियाजी के आकाश क्षेत्र पर दौड़ आये। सूरज के ताप को शिथिल कर लोगों तक शीतल छाया का संदेश भेजा। ताप-तप्त लोगों ने राहत की सांस ली और धूप को बादलों के हाथ से हारते हुए देखा। लोग देख ही रहे थे कि तब तक बादल बरसना शुरू। कुछ मिनट तक वह क्रम रहा, फिर बन्द। तब लगा कि हजारों नागरिकों के मध्य बादल आये, अपने गुरुवर और मुनिवर के पैर पखारे और चले गये।

पंडितों ने विचार किया कि भक्त रूपी बादलगण प्रकृति के प्रतिनिधि बन कर आये थे और साक्षात गोमटेश्वरी दिगम्बर मुद्रा का महामस्तकाभिषेक कर चले गये। कवि गण सोच रहे थे- बादल बादल नहीं थे वे जरूर देव थे, इन्द्र सहित आये थे और प्रथम अभिषेक का लाभ लेकर विलीन हो गये। कुछ समय पानी रुक गया। बादल विहार कर गये। किरणों का आगमन हुआ। धूप ने फिर झंडा फहराने का प्रयास किया। जनसमूह प्रकृति का पावन परिवर्तन देख रहा था। उन्हें लगा यह सब गुरु और शिष्य के पुण्यों का प्रभाव है। बस!

भीड़ में सयाने थे तो बच्चे भी थे। अपने मनगढंत विचार गुनने में लगे थे, उन्हें लगा कि ब्र. विद्याधर ने जैसे ही वस्त्र छोड़े, इंद्र का सिंहासन डोल गया, अतः उसने अपनी सम्मति दर्शाने के लिए बादलों का रूप लिया, नाचा, वर्षा की, अभिषेक का लाभ लिया और चलता बना।

पूज्य गुरुवर ने उन्हें स-मंत्र पिच्छिका और कमंडलु प्रदान किये, आवश्यक निर्देश दिये और फिर दिया कल्याणकारी प्रवचन।

उनकी आज्ञा से दो शब्द मुनि विद्यासागर ने भी बोले।

समूह गुरु और शिष्य के दर्शनों में लीन था। अपार जनमेदिनी अपने नेत्र धन्य कर रही थी। युवा सम्राट मुनि विद्यासागर बालयति महावीर की तरह प्रतीत हो रहे थे। सब एक टक देख रहे थे। कोई आँखें हटाने को तैयार नहीं था। सदलगा की धूल धर्म के सेहरा का फूल बन गई थी, अजमेर जहाँ सेहरा की चर्चा सबसे अधिक की जाती है, उस अजमेर में।

विद्यासागर जी के दीक्षा संस्कार में पिता-माता बनने का गौरव, मुनीन्द्र गुरुवर ज्ञानसागर के परमभक्त श्री हुकमचंद लुहाड़िया एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जतन कँवरजी ने प्राप्त किया था। जो यश आज उक्त माता-पिता ने प्राप्त किया था, वह उस कार्यक्रम के 22 वर्ष पूर्व सदलगा में भी एक माता और पिता ने प्रकृति के माध्यम से पा लिया था। तब पिता थे- श्री मलप्पाजी अष्टगे और माता थी श्रीमती श्रीमतीजी।

अजमेर के मंच पर विराजित धर्म पिता-माता (लुहाड़िया दम्पति) ने मुनीन्द्र गुरुवर ज्ञानसागरजी से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत प्राप्त किया एवं भव सफल बनाने के सु-सूत्र हृदय में सजा लिये।

कार्यक्रम पूर्ण हो गया।

दूसरे दिन अजमेर की नसिया से आहार के लिये- एक नहीं, दो मुनिराज निकले। आगे मुनीन्द्र गुरुवर ज्ञानसागरजी पीछे मुनिवर विद्यासागरजी।

मुनीन्द्र गुरुवर ज्ञानसागर के परम भक्त धर्मवीर भागचंद सोनी को प्रथम दिन प्रथम आहार का सौभाग्य प्राप्त हुआ, पू. मुनि विद्यासागर जी ने उनके चौके में उजास फैला दिया। ('ज्ञान का सागर' ग्रंथ से साभार)

धर्म को जानने वाला व्यक्ति पुण्य से कमाता है और पुण्य के क्षेत्र में लगाता है।

परोपकार ही स्वोपकार

संकलनकर्ता : सुशीला पाटनी
आर. के. हाऊस, किशनगढ़

सुख के माथे सिल पड़े, प्रभु को नाम भुलायें।
बलिहारी इस दुःख की, जो पल पल नाम जपायें।।

जीवन में जब दुःख आता है, वह आखिर में सुख का हाथ पकड़ कर जाता है। वह कहकर जाता है कि इतने दिन मैं तुम्हारे साथ रहा हूं, मगर अब ध्यान रखना इस सुख में फूल मत जाना और हाँ मुझे भूल मत जाना, मुझे याद रखना। सुख में जो व्यक्ति संभलकर चलता है, जवानी में संभल कर चलता है, उसे बुढ़ापे में पछताना नहीं पड़ता। जीवन में समस्याऐं तो आती ही रहती हैं। समस्याऐं हैं तो उनका समाधान भी है। एक माँ थी। उसका एक बेटा था। माँ बेटे बड़े गरीब थे। एक दिन मां ने बेटे से कहा – बेटा, यहां से दूर तपोवन में एक दिगम्बर मुनि पधारे हैं। वे बड़े सिद्ध पुरुष हैं और महाज्ञानी हैं। तुम उनके पास जाओ और पूछो कि हमारे ये दुःख के दिन और कब तक चलेंगे? इसका अन्त कब होगा?

पुराने समय की बात है। यातायात की सुविधा नहीं थी। अतः खाने पीने का सामान लेकर मां से विदा ली। वह पदयात्रा पर था। चलते चलते सांझ हो गई। गांव में किसी के घर रात्रि विश्राम करने रुक गया। सम्पन्न परिवार था। सुबह उठकर वह आगे की यात्रा पर चलने लगा तो घर की सेठानी ने पूछा – बेटा कहां जा रहे हो? उसने अपनी यात्रा का कारण सेठानी को बताया। तो सेठानी ने कहा – बेटा एक बात मुनिराज से मेरी भी पूछ आना कि मेरी इकलौती बेटी है, वह बोलती नहीं है, गूंगी है। वह कब तक बोलेगी? तथा इसका विवाह किससे होगा? उसने कहा ठीक है और वह आगे बढ़ गया।

रास्ते में उसने एक और पड़ाव डाला। अब की बार उसने एक संत की कुटिया में पड़ाव डाला था। विश्राम के पश्चात् जब वह चलने लगा, तो उसे संत ने भी पूछा – कहां जा रहे हो बालक? उसने संत श्री को भी अपनी यात्रा का कारण बताया। उस संत ने कहा – बालक मेरी भी एक समस्या है उसे भी पूछ लेना। मेरी समस्या यह है कि मुझे साधना करते हुये 50 वर्ष हो गये। मगर मुझे अभी तक संतत्व का स्वाद नहीं आया। मुझे संतत्व का स्वाद कब आयेगा? मेरा कल्याण कब होगा? बस इतना सा पूछ लेना। युवक ने कहा – ठीक है, और संत को प्रणाम करके आगे चल पड़ा।

युवक ने एक पड़ाव और डाला। अब की बार का पड़ाव एक किसान के खेत पर था। रात में चर्चा के दौरान किसान ने उससे कहा – मेरे खेत के बीच में एक विशाल वृक्ष है। मैं बहुत परिश्रम और मेहनत करता हूं लेकिन उस बड़े वृक्ष के आसपास दूसरे वृक्ष पनपते नहीं हैं। पता नहीं क्या कारण है? किसान ने युवक से कहा – मेरी भी समस्या का समाधान कर लेना। युवक ने स्वीकृति में सिर हिला दिया और सुबह आगे बढ़ गया। अगले दिन वह मुनिराज के चरणों में पहुंच गया। मुनिराज के दर्शन किये। दर्शन करके उसने अपने जीवन को धन्य माना। मुनिराज से प्रार्थना की कि प्रभु! मेरी कुछ समस्याऐं हैं जिनका मैं समाधान चाहता हूं। आप आज्ञा दें तो श्री चरणों में निवेदन करूं। मुनिराज ने कहा – ठीक है, मगर एक बात का विशेष ख्याल रखना कि तीन प्रश्न से ज्यादा मत पूछना। मैं तुम्हारे किन्हीं तीन प्रश्नों का ही समाधान दूंगा, इससे ज्यादा का नहीं।

युवक तो बड़े धर्म संकट में पड़ गया। अब क्या करूं? प्रश्न तो चार हैं, तीन कैसे पूछूं? तीन प्रश्न दूसरों के हैं और एक प्रश्न मेरा खुद का है। अब किसका प्रश्न छोड़ दूं। क्या लड़की का प्रश्न छोड़ दूं? नहीं, यह तो ठीक नहीं है। यह उसकी जिन्दगी का सवाल है। तो क्या महात्मा का प्रश्न छोड़ दूं? यह नहीं हो सकता। तो क्या किसान का प्रश्न छोड़ दूं? नहीं यह भी ठीक नहीं है। बेचारा खून पसीना एक करता है, तब भी उसे कुछ भी नहीं मिलता है। अन्त में काफी ऊहापोह के बाद उसने तय किया कि वह खुद का प्रश्न नहीं पूछेगा। उसने अपना प्रश्न छोड़ दिया और शेष तीनों प्रश्नों का समाधान लिया और वापस अपने घर की ओर चल दिया।

रास्ते में सबसे पहले किसान से मुलाकात हुई। युवक ने किसान से कहा – मुनिराज ने कहा है कि तुम्हारे खेत में जो विशाल वृक्ष है, उसके नीचे चारों तरफ सोने के कलश दबे हुऐ हैं। इसी कारण से तुम्हारी मेहनत सफल नहीं होती है। किसान ने वहां खोदा तो सचमुच सोने के कलश निकले। किसान ने कहा – बेटा यह धन–सम्पदा तेरे कारण से निकली है, अतः इसका मालिक तू है और किसान ने वह सारा धन उस

युवक को दे दिया। युवक आगे बढ़ा। अब संत के आश्रम में आया। संत ने पूछा – मेरे प्रश्न का क्या समाधान बताया है? युवक ने कहा – स्वामीजी, माफ करना, मुनिराज ने कहा है कि आपने अपनी जटाओं में कोई कीमती मणि छुपा रखी है। जब तक आप उस मणि का मोह नहीं छोड़ेंगे, तब तक आपका कल्याण नहीं होगा। साधु ने कहा – बेटा तू ठीक ही कहता है। सच में मैंने एक मणि अपनी जटाओं में छिपा रखी है, और मुझे हर वक्त इसके खो जाने का, चोरी हो जाने का भय बना रहता है। इसलिये मेरा ध्यान भजन सुमिरन में भी नहीं लगता। अब इसे तू ही ले जा और साधु ने वह मणि उस युवक को दे दी।

युवक दोनों चीजों को लेकर फिर आगे बढ़ा। अब वह सेठानी के घर पहुंचा। सेठानी दौड़ी दौड़ी आई और पूछा – बेटा! बोल क्या कहा मुनिराज ने। युवक ने कहा कि मां जी, मुनिराज ने कहा है कि तुम्हारी बेटी जिसको देखकर ही बोल पड़ेगी वही इसका पति होगा। अभी सेठानी और उस युवक की बात चल ही रही थी कि वह लड़की अन्दर से बाहर आई और उस युवक को देखकर ही एकदम से बोल पड़ी। सेठानी ने कहा – बेटा! आज से तू इसका पति हुआ। मुनिराज की वाणी सच हुई। और उसने अपनी बेटी का विवाह उस युवक से कर दिया।

अब वह युवक धन, मणि और कन्या लेकर अपने घर पहुंचा। माँ ने पूछा – बेटा! तू आ गया। क्या कहा है मुनिश्री ने? कब हमें इन दुःखों से मुक्ति मिलेगी? बेटा ने कहा माँ मुक्ति मिलेगी नहीं, मिल गई। मुनिराज के दर्शन कर मैं धन्य हो गया। उनके तो दर्शन मात्र से ही जीवन के दुःख, पीड़ायें और दर्द खो जाते हैं। मां ने पूछा – तो क्या मुनिराज ने हमारी समस्याओं का समाधान कर दिया है। बेटे ने कहा – हाँ मां! मैंने तो अपनी समस्या उनसे पूछी ही नहीं और समाधान भी हो गया। मां ने पूछा वो कैसे? बेटे ने कहा – मां, मैंने सबकी समस्या को अपनी समस्या समझा तो मेरी समस्या का समाधान स्वतः हो गया। जब दूसरों की समस्या खुद अपनी समस्या बनने लगती है तो फिर अपनी समस्या कोई समस्या ही नहीं रहती।

अच्छा बेटा, तुमने कुछ खाया पीया नहीं। पहले भोजन करो, फिर बताना क्या हुआ? पुत्र ने भोजन किया और स्वल्प समय विश्राम कर उसने सम्पूर्ण घटित घटन स्पष्ट सुनाई। धन के साथ पुत्रवधु को पाकर किसे प्रसन्नता न होगी? वृद्धा आनन्द से फूल उठी। उसने पुत्र को उर से लगाकर, बेटा सदा तुम स्वोपकार के लिये परोपकार में निरत रहना। यही दया धर्म है, अहिंसा परमो धर्म है। कहा भी है–

जीवा जिणवर जो मुणइ जिणवर जीव मुणेइ।
सो समभाव परट्ठइ, लहुणिव्वाण लहेइ।।

अर्थात् जो व्यक्ति समस्त जीवों को जिनेन्द्र और जिनेन्द्र को जीव मानता है वही समदृष्टि है और वह शीघ्र निर्वाण पद प्राप्त करता है। बेटे! कभी भी किसी का अपकार नहीं करना, हमारे गुरुजनों का उपदेश है। उपकारी का उपकार करना तो अच्छा है ही, परन्तु अपकारी का उपकार करना उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है।

इस कथा का सार यही है कि अपना हित चाहते हो तो मन, वचन, काय से कभी भी किसी का अहित नहीं करना, अपितु हित – उपकार करने का ही प्रयास करना। जैसा कहा है –

जो तोको काँटा बुबै, ताहि बोय तू फूल।
तोय फूल के फूल हैं, वाकों हैं त्रिशूल।।

विद्या–वंदना (दोहे)

डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन

संत न होते जगत् में, जल जाता संसार।
इसीलिए तो जगत् में, विद्यासागर सार।।

आज यहाँ कल वहाँ पर, चर्चा धर्म अपार।
इस नगरी में आ गये, संत सहज अधिकार।।

वर्षा करते धर्म की, नीतिक बातें चार।
पुरुषारथ भी चार हैं, धर्म उतारे पार।।

विदिशा दिशा सुधर गई, कोटा है अभिराम।
विद्या सुधा प्रवेश से, हुए भक्त के काम।।

वहाँ तत्त्व की बात है, यहाँ तत्त्व से काम।
सारी जगती कह रही, संतन सों सब काम।।

अपनी करनी आप है, अपना है गुण धाम।
बिना करे कुछ न मिले, भाग्य सराहै काम।।

सत्य परेशान हो सकता है, परन्तु पराजित नहीं।

चाय

- डॉ. कला कासलीवाल, जयपुर

चाय का प्रचलन आजकल घर-घर में चल पड़ा है। यह एक प्रकार के सूखे हुए पत्ते हैं। सुखाने के बाद इनको गरम किया जाता है। इससे उसमें सुगंध और स्वाद आता है। चाय में कैफीन होता है जो कि हृदय के लिए उत्तेजना का कार्य करता है। इसको प्रतिदिन पीने से इसका प्रभाव महसूस नहीं होता है। चाय में गुण करने वाले पदार्थ सिर्फ कुछ प्रतिशत तक ही होते हैं। इसमें 15 प्रतिशत पौष्टिक पदार्थ रहते हैं। चाय में टेनिन रहता है जिससे कब्ज होती है। चाय को अधिक देर तक उबलने दिया जाए तो उस समय टेनिन की खुशबू आती है।

चाय को कम मात्रा में पीने से सुस्ती एवं नींद आती है। अधिक मात्रा में पीने से शरीर में गर्मी, फुर्ती आकर नींद गायब हो जाती है। नींद को रोकने के लिए रात्रि में काम करने वाले अथवा पढ़ने वाले चाय का उपयोग करते हैं। इस चाय को पीने से मस्तिष्क में अलग ही प्रकर की बेचैनी हो जाती है जिससे सिर भारी हो जाता है तथा पढ़ा हुआ पाठ याद नहीं रहता।

पौष्टिक भोजन करने के बाद कुछ मात्रा में यदि चाय ले ली जाए तो वह नुकसान नहीं करती। किन्तु जो लोग कमजोर हैं, निर्बल हैं उन लोगों के लिए चाय हानिप्रद है। गरीब लोगों के लिए चाय का अतिसेवन कष्टप्रद है इससे बार-बार मस्तिष्क तंतुओं पर जोर पड़ता है तथा वे निर्बल हो जाते हैं। चाय के साथ दूध का सेवन अवश्य करें इससे चाय का जहर कम हो जाता है। कुछ लोग भोजन के पश्चात चाय पीते हैं यह नुकसान करती है। भोजन के दो-चार घण्टे बाद ही चाय पीनी चाहिए।

1. चाय तासीर में गर्म है।
2. इसको पीने से मन को प्रसन्नता एवं मस्तिष्क को उत्तेजना मिलती है।
3. यह स्वेद (पसीना) और मूत्र अधिक लाती है।
4. सिर दर्द एवं पेट की जलन को दूर करती है।
5. सूजन में चाय के पानी से सेंक करने से उतर जाती है।
6. यह गुर्दे की खराबी में होने वाली रुकावट को दूर करती है।
7. शरीर में पित्त और कफ की रुकावट हो तो चाय में त्रिफला और रेवन्द चीनी मिलाकर उबाल कर पीने से लाभ होता है।
8. उदरशूल में पोदीना और अकरकरा के फूल के साथ पीने से वायु से होने वाला पेट दर्द ठीक हो जाता है।
9. जुकाम में बनप्सा और मुलहठी के साथ पीने से जुकाम और नजले में लाभ होता है।
10. **प्रसूति कष्ट** - केशर के साथ चाय पीने से प्रसूति कष्ट मिटकर ब आसानी से हो जाता है।
11. **हानिकर** - चाय गर्म प्रकृति वालों को सुबह-सुबह खाली पेट नहीं पीनी चाहिये। इसके पीने से मुंह में खुश्की, खुजली, श्वास, अग्निमांध (भूख कम होना) हो जाता है।

मात्रा - 1 चम्मच चाय को एक कप पानी में 3 मिनिट उबाल कर छान कर दूध चीनी मिलाकर पीनी चाहिये।

उपयोग - चाय की फीकी पत्ती को सुखाकर हम खाद के काम ले सकते हैं जबकि मीठी चाय की पत्ती फेंकने में जाती है क्योंकि वह पौधों में भी नहीं डाल सकते। फीकी उबली हुई पत्ती को सिर धोने के काम में ली जा सकती है, मंजन में भी काम ले सकते हैं।

चाय पत्ती के पानी से सिर धोने से बालों में चमक आ जाती है और बाल लम्बे हो जाते हैं।

दो नेत्रहीनों के जीवन में रोशनी दे गये पी.के.जैन

यह रंग बिरंगी दुनिया हमारे बाद हमारी आँखों से कोई और भी देख सके। नेत्रदान का संकल्प तो काफी लोग ले लेते हैं परन्तु मरणोपरांत उनके परिजन या तो भूल जाते हैं अथवा रुढ़ियों के चलते नेत्र बैंक के चिकित्सकों को बुलाते नहीं। प्रदुमन कुमार जैन नहीं रहे, लेकिन इनकी आँखें दो नेत्रहीन व्यक्तियों की जिंदगी में रोशनी भरेंगी उनकी आँखों से दो लोग संसार देख सकेंगे और उम्र भर याद करते रहेंगे। इस महान कार्य में तरुण मित्र परिषद का महत्वपूर्ण योगदान रहा। परिषद के महासचिव श्री अशोक जैन ने बताया कि 16 जून को प्रातः प्रदुमन कुमार जैन का देहावसान हो गया तो गुरुनानक आई सेन्टर को फोन पर सूचना दी गई तो आई सेन्टर के पास चिकित्सकों को भेजने के लिए वाहन उपलब्ध नहीं था अतः श्री जैन के परिजनों द्वारा सेन्टर से चिकित्सकों का लाना व नेत्रदान पश्चात उनको वापिस छोड़ना दुखद लगा।

श्री प्रदुमन कुमार जैन ने अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ मरणोपरांत नेत्रदान का संकल्प लिया था तदनुसार उनके परिवार के सदस्यों ने उनकी आँखें दान कर दीं, जिन्हें शीघ्र ही दो नेत्रहीन व्यक्तियों की आँखों में प्रत्यारोपित कर दिया जायेगा। जिससे वे संसार को देखने योग्य हो जाएंगे। अशोक जैन ने बताया कि तरुण मित्र परिषद की प्रेरणा व प्रयास से अब तक कई लोगों के नेत्रदान कराए जा चुके हैं और जनसाधारण को प्रेरित करने हेतु विभिन्न स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं, आप भी मरणोपरांत नेत्रदान हेतु 1919 पर फोन पर इस महान कार्य में योगदान दे सकते हैं।

- अशोक जैन, दिल्ली

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये ।

रोगों के सरल उपचार

संकोचन - ठण्डा पानी संकोचन क्रिया का कार्य भी करता है जैसे किसी स्थान पर लग जाने से वहाँ शोथ (सूजन) हो जाता है। उस स्थान को बर्फ से सेंकने पर सूजन कम हो जाती है।

प्रदर - स्त्रियों में योनिमार्ग से होने वाले लाल सफेद पानी के स्राव को ठण्डे पानी की पिचकारी से धोने से लाभ मिलता है।

गुदभ्रंश - स्त्रियों में कमलमुख (शरीर) का योनि मार्ग से बाहर निकलना तथा बच्चों की गुदा वाला भाग जिसे काँच निकलना कहते हैं यदि बर्फ या बर्फ के पानी से धोया जाएं या पिचकारी लगाएं तो तुरन्त लाभ होता है।

वमन - गर्मी में होने वाले वमन में बर्फ का पानी पिलाने से अथवा आमाशय(पेट) पर बर्फ कटोरी में डालकर सेंक करने से वमन तुरन्त बन्द हो जाती है।

अतिसार - वायु से, गर्मी से, बदहजमी से होने वाले दस्तों में, पेडू पर गीली पट्टी रखने अथवा बर्फ का सेंक करने से दस्त तुरन्त ही रुक जाते हैं।

हैजा - उल्टी दस्तों में तो बर्फ का सेंक अत्यन्त ही उपयोगी है।

दाहशामक - ठण्डा पानी बाहर हो या भीतर सभी प्रकार की अग्नि को शांत करता है। ज्वर का ताप अधिक बढ़ जाए तो सिर पर शीतल पट्टी का उपयोग करें। गर्मी की दुखती आँखों की ललाई एवं जलन में शांति मिलती है। मूर्च्छा तथा योषापस्मार में ठण्डे पानी के मुँह पर छींटे देने से आया हुआ दौरा खुल जाता है।

उष्णोपचार - जिस प्रकार शतल जल कई रोगों में फायदा करता है उसी प्रकार उष्णोदक भी कितने ही रोगों में लाभ करता है यथा सेंक करने से, भपारा (भाप) देने से, पिचकारी से, गरारे से, पानी में बैठने से लाभ मिलता है।

सभी प्रकार के दर्दों में सेंक करने से लाभ मिलता है जैसे चाहे पसली का दर्द हो या पेट का अथवा सूजन हो। सभी स्थानों पर गरम पानी का सेंक लाभदायक है। जैसे दो कपड़ों को लेकर गर्म पानी में डाल दें। इसमें से एक कपड़े को निकालकर हल्का सा पानी निकालकर उसका सेंक करें। फिर उस कपड़े को पानी में डाल दें। अब दूसरे कपड़े को दर्द वाले स्थान पर लगा दें। इस तरह सेंक करने से उस दर्द वाले अंग का दर्द कम हो जाता है। इसी क्रिया को यदि पेडू पर भी किया जाए तो रुका हुआ पेशाब भी आराम से हो जाता है।

भपारा - उबलते हुए पानी के बर्तन के ऊपर मुंह को रखकर वाष्प सूंघने से बंद नाक भी आराम से खुल जाती है। ऐसा करने से वर्षों पुराना प्रतिश्याय, शिरः शूल कण्ठावरोध आदि में लाभ होता है। शरीर हल्का पड़ता है। सर्दी वातश्लेष्मिक ज्वर आदि में भपारा आदि लेना ठीक रहता है।

पिचकारी - अत्यधिक क्रूर कोष्ठबद्धता (कब्ज) होने पर जबकि कब्जनिवारक दवा से लाभ नहीं हो रहा हो उस समय गर्म पानी का एनिमा दिया जाए तो तुरन्त ही मल बन्ध खत्म हो जाता है।

मुंह के दर्द में, दाँत के रोगों में नमक को गर्म पानी में डालकर गरारे करने से शूल शांत हो जाता है। दाँत निकलवाने के बाद होने वाले रक्त स्राव में गरारे करने से रक्त स्राव बंद हो जाता है।

कई रोगों में स्नान से लाभ मिलता है। आक्षेप, मूत्रकृच्छता, कटिशूल, पेडू में दर्द, अल्पार्त्तव माहवारी में रक्त की अल्पता होना इन सब में गर्म पानी से सेंक करने से लाभ मिलता है।

डॉ. बगड़ा को 2 लाख 11 हजार का रजतकीर्ति पुरस्कार
किशनगढ़ में मिला 'अहिंसा मनीषी' अलंकरण

किशनगढ़। बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की परम्परा के वर्तमान पट्टाधीश राष्ट्रगौरव, वात्सल्य वारिधि आचार्यश्री 108 वर्द्धमानसागरजी महाराज के 25वें आचार्य पदारोहण रजतकीर्ति चारित्र महोत्सव 25-29 जून के मध्य 27 जून को प्रख्यात शाकाहार मनीषी, वरिष्ठ पत्रकार अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों के विजेता, विचार मासिक दिशाबोध, द वेजीटिरियन गाइड के संपादक, अ.भा.जैन पत्र संपादक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा (कोलकाता) को 2 लाख 11 हजार के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। समारोह के परम शिरोमणि संरक्षक श्री अशोक पाटनी (आर.के.मार्बल) ने लगभग दो किलो के रजत जड़ित अभिनंदन प्रशस्ति का वाचन कर शाकाहार के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के आधार पर आपको 'अहिंसा मनीषी' की उपाधि से सम्मानित किया।

इस अवसर पर आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज ससंघ व म.प्र.सरकार के पूर्व मंत्री श्री कपूरचंद घुवारा (टीकमगढ़) महोत्सव कमेटी के पदाधिकारी व वर्द्धमान संदेश के संपादक श्री अजित पाटनी (कोलकाता) सहित अनेक पदाधिकारी एवं गणमान्य जन उपस्थित थे। संचालन प्रतिष्ठाचार्य पं. श्री हसमुख जैन नंदनवन धरियावद ने किया।

- राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद

गोम्मटगिरि इन्दौर में म.प्र.का पहला बारह दिवसीय मौन साधना धर्मध्यान शिविर सम्पन्न ।

अमेरिका सहित 19 स्थानों के 84 साधकों ने की सहभागिता

गोम्मटगिरि इन्दौर । मध्यप्रदेश में पहली बार दस दिवसीय आवासीय धर्मध्यान शिविर 22 जून से 3 जुलाई तक अतिशय क्षेत्र गोम्मटगिरि इन्दौर में ब्र.जितेन्द्र भाई द्वारा संपन्न हुआ । विमलचंद माणकचंद छाबड़ा धार्मिक एवं पारमार्थिक न्यास, गांधी नगर इन्दौर द्वारा लगाए गए उक्त शिविर में अमेरिका सहित म.प्र., महाराष्ट्र आदि स्थानों में से 200 से अधिक आवेदनों में 84 लोगों को चयनित किया गया था । प्रातः 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक की सुव्यवस्थित दिनचर्या व कठोर अनुशासन में रुपस्थ ध्यान, पिण्डस्थ ध्यान, पृथ्वी धारणा आदि के सफल व साक्षात् प्रयोग कराये गए ।

न्यास के अध्यक्ष प्रकाश छाबड़ा ने बताया कि परम वैज्ञानिक मुनिश्री वीरसागरजी महाराज की प्रेरणा से यह शिविर 1989 में प्रारंभ किए गए थे । 1989 में महाराष्ट्र के सावरगाँव, सोलापुर में मुनिश्री ने उक्त शिविर स्वयं लगाए उपरांत क्षुल्लिका सुशीलमतिजी, सुव्रतामतिजी माताजी ने सन् 2002 तक शिविरों का संचालन किया व हजारों लोगों को धर्मध्यान का वास्तविक तरीका बताया । 2004 से बा.ब्र.जितेन्द्र भाई उक्त शिविरों का संचालन कर रहे हैं । महाराष्ट्र में 52 शिविर हो चुके है, म.प्र. में यह पहला शिविर था । शिविर में बताया गया कि पहले स्वयं को पहचानों 'पहचान बिन प्रीति नही, प्रीत बिन मिलन नहीं, मिलन बिन आनंद नहीं, आनंद बिन संयम नहीं, संयम बिन मुनि नहीं, मुनि बिन मोक्ष नहीं' ।

शिविरार्थी 11 दिनों तक पूर्ण रुप से मौन रहे, उन्हें पॉच अणुव्रतों का पालन करना आवश्यक था, सफेद वस्त्र धारण करना व बाहय सभी प्रकार के संपर्क मोबाईल आदि से पूर्णतः निवृत्त रहना था । समापन समारोह में शिविरार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए शिविर को अद्भुद, आनंददायी, अलौकिक, प्रयोगिक बताते हुए अपने विचार व्यक्त किये व अद्भुद ऊर्जा से परिपूर्ण अपने को बताया।

18 से 78 वर्ष तक के शिविरार्थी

श्री त्रिलोकचंद जैन (गुरुजी) ने बताया कि अपने जीवन में अनेक शास्त्र पढ़ें, प्रवचन सुने, तीर्थ यात्राएं की, लेकिन इन दस दिनों में जो मिला वह वास्तविक था, जो शिविर के दौरान सीख वह कहीं नहीं सीखा, आत्मबल, निडरता बढ़ी है । शरीर व आत्मा का भेद जानने का अवसर मिला । श्रीमती रश्मि जैन का कहना था कि मैं बहुत वाचाल किस्म की महिला थी, पहली बार मौन की ताकत समझ में आई है । संकल्प–विकल्पों से लड़ने का अभ्यास हुआ है । श्रीमती आशा जैन का कहना था कि दस दिनों में जाना कि सर्वोत्कृष्ट अनुपम ज्ञान की धरोहर क्या है । भगवान से मौन चर्चा भी हो सकती है, यह जाना । सबसे कम उम्र का प्रतिभागी कु.अवनी का कहना था कि मम्मी कहती थी कि मंदिर जाओ, पूजा करो आदि लेकिन मैं मंदिर क्यों जाऊ इसका उत्तर नहीं मिला था, शिविर के माध्यम से समस्त आयनिक मंदिर क्यों जाना, पूजा क्यों व कैसे करना, भगवान क्या है, कैसे है, भगवान की ओर कैसे देखना चाहिए आदि बातें शिविर के माध्यम से समझ में आई है, जो मेरे जीवन का टर्निंग पाईन्ट है । पं.खुमान सिंह उज्जैन का कहना था कि ऐतिहासिक शिविर में पता हुआ कि भगवान के दर्शन कैसे करना । भगवान तक पहुंचने की पहली सीढ़ी यहॉ से प्राप्त हुई है । राकेश बज गोयल नगर का कहना था कि अभी तक प्रतिदिन अभिषेक किया, लेकिन अभिषेक क्यों व कैसे करना उसका मर्म अब समझ में आया है । श्रीमती इन्द्रा सोनी का कहना था कि भगवान की भक्ति कैसे की जाती है अब समझ में आया है । दिनेश शाह का कहना था कि 233 घ मौन व 250 घण्टे बिना मोबाईल के भी रहा जा सकता है, शिविर से नये मार्ग की प्रशस्ति व स्वात्मलब्धि हुई है । श्रीमती पुष्पा जैन का कहना था कि ध्यान साधना से आत्म साधना का रास्ता खुला, तीन लोक में अकेला आया हूँ यह दृढ़ श्रद्धान हुआ । डॉ. भरत जैन उज्जैन का कहना था कि अभी तक जो कुछ किया वह कुछ काम का नहीं था, दस दिनों में यह तय हुआ कि शिविर में जो किया है, करेंगे वह काम का है । इन्कम टैक्स कमिश्नर पवन वेद मुंबई ने कहा कि शिविर के दौरान पता चला कि अभी तक जो कर रहे थे वह बाह्य क्रियाएं थी अब अंदर भेद समझ में आया है । बिना बाह्य साधनों के भी जीवन जी सकते है, मौन से कषायों को कंट्रोल कर सकते हैं ।

अमेरिका से आए डॉ. उदय मेहता जो सिर्फ शिविर में सम्मिलित होने अमेरिका से आए थे, का कहना था कि पहली बार

बुद्धिमान व्यक्ति सुनते सब की हैं लेकिन करते मन की है ।

एहसास हुआ कि दुनिया मेरे बिना भी चलती है, मैं दुनिया के लिए नहीं, दुनिया मेरे लिए नहीं, परिग्रह मिथ्या है, यह बात पूरी तरह से समझ में आई है । मनोज शाह का कहना था कि शिविर के माध्यम से मृत्यु का भय समाप्त हो गया, जीवन के सार्थक व सर्वोत्तम दिन अगर है तो वे शिविर के दौरान ही थे । कैलाश छाबड़ा का कहना था कि अपने प्रभु से कैसे बात करना यह सीख गए । ब्र. मनोरमाजी का कहना था कि शिविर से जाना कि भगवान को व स्वयं को देखे आनंद में डुबकी लगाए तो एक दिन हम परमात्मा बन जाएंगे । समापन कार्यक्रम का संचालन निलचंद छाबड़ा गांधीनगर ने करते हुए सभी का आभार व्यक्त किया ।

केलकुलेशन नहीं समर्पण आवश्यक – ब्र.जितेन्द्र

शिविर में ध्यान साधना कराने वाले ब्र. जितेन्द्रजी ने कहा कि हम जीवनभर केलकुलेशन में लगे रहते है हमें समर्पण की आवश्यकता है । अपने को भूलना दुःख है । अपने को न भूलना सुख है, जो शुद्ध को जानता है वह शुद्धता प्राप्त करता ही है । शिविर में ब्र. वीतराग शास्त्रि, विकास–सारिका छाबड़ा, प्रतीक–सोनाली गांधी, वीरकुमार डोसी, प्रणय बसंतजी डोसी, विजय राऊत आदि का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ ।

अनेक साधकों के जीवन में परिवर्तन आया

ब्र.जितेन्द्रजी व ब्र.वीतराग शास्त्री ने बताया कि बाहय साधनों से दूर रहकर धर्मध्यान की ओर प्रवृत्त करने वाले मुनिश्री वीरसागरजी महाराज ने 35 वर्श की उम्र में दीक्षा ग्रहण की थी । 1975 से 1993 तक 18 वर्ष के चर्याकाल में उन्होंने अनेक जीवों को धर्मध्यान की ओर प्रवृत्त किया व कुछ लोग जो जैन दर्शन से विमुख है तथा अन्य ध्यान पद्धतियों की ओर आकर्षित हो रहे थे उनके लिए उक्त धर्मध्यान शिविर जैन आगम के अनुसार तैयार किया व जैन धर्म से विमुख हो रहे जीवों के प्रति उपकार किया है। शिविर की विस्तृत जानकारी हेतु उमेश गांधी पंढ़रपूर 09890357957, जवाहरलाल डोसी अकलूज 09822625625 व ब्र. वीतराग शास्त्री अकलूज 09922769227 पर संपर्क किया जा सकता है ।

– प्रेषक : अनुपमा जैन, सनावद

प्रतिष्ठाचार्य पं0 गुलाबचंद्र जी पुष्प "प्रतिष्ठा पुंज" अलंकरण से विभूषित

इंदौर। धर्मप्रभावक, प्रतिष्ठा पितामह, संहितासूरि, वाणीभूषण, प्रतिष्ठाचार्य श्री पं0 गुलाबचंद्र जी पुष्प टीकमगढ़ को उनके 90वें जन्म दिवस पर प्रभावना जनकल्याण परिषद् (रजि0) की ओर से 06 जुलाई 2014 को श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विजय नगर इंदौर में आयोजित एक समारोह में "प्रतिष्ठा पुंज" के अलंकरण से विभूषित किया। आयोजन का संयोजन परिषद के अध्यक्ष श्री सुरेश मारौरा इंदौर ने किया।

इस अवसर पर श्री पं0 रतनलाल शास्त्री, दिगम्बर जैन समाज इंदौर के अध्यक्ष श्री प्रदीप कासलीवाल, श्रेष्ठि श्री संतोष घडी सागर, ऋषभदेव विद्वत महासंघ के महामंत्री डा0 अनुपम जैन इंदौर, वीर निकलंक के संपादक श्री रमेश कासलीवाल, हलचल पत्रिका के संपादक डा0 महेन्द्र जैन मनुज, एम.के. जैन एलआईसी, परिषद के अध्यक्ष श्री सुरेश मारौरा, कोषाध्यक्ष श्री राजीव जैन निराला, श्री सुबोध मारौरा आदि प्रमुख लोगों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

पं0 गुलाबचंद्र जी पुष्प को माला, श्रीफल, शाल, तिलक, पगड़ी और प्रशस्ति पत्र देकर अलंकृत किया गया।

प्रेषक : डा0 सुनील संचय, ललितपुर, महामंत्री

डॉ. श्रेयांस जैन को रजतकीर्ति वाग्भारती अलंकरण

किशनगढ़। अखिल भारतीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद के यशस्वी अध्यक्ष व्याख्यान वाचस्पति डॉ. श्रेयांसकुमार जैन (बड़ौत) को उनकी विशिष्ट विद्वत सेवाओं के लिए रजतकीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आचार्य वर्द्धमानसागरजी महाराज के 25वें आचार्य पदारोहण रजतकीर्ति चारित्र महोत्सव के अंतर्गत चयनित पांच विशिष्ट विद्वानों में डॉ. जैन का चयन किया।

आचार्य संघ के सान्निध्य में उन्हें रजत प्रशस्ति, शॉल, श्रीफल व पगड़ी पहना कर वाग्भारती की उपाधि प्रदान की गई। उल्लेखनीय है कि डॉ. जैन विगत पंद्रह वर्षो से शास्त्रि, परिषद के अध्यक्ष हैं व जैन दर्शन के प्रतिनिधि विद्वान हैं, जिन्हें अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। पुरस्कृत होने पर उन्हें अनेक स्नेहीजनों ने बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की।

- राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद

बिना पूछे न बोलें और पूछने पर असत्य न बोलें।

राष्ट्रसंत मुनिश्री पुलकसागर महाराज पहुचें पनिहार 108 कलशों से भगवान आदिनाथ का हुआ महामस्तकाभिषेक

ग्वालियर 2 जुलाई । हमारे पूर्वजो ने यह अदभुत सम्पदा हमें सौंपी है, इन प्राचीन तीर्थों की रक्षा और जीर्णोद्धार की जिम्मेदारी हमारी है, हम सौ नये मंदिर बनायें उससे अच्छा किसी एक प्राचीन तीर्थ का जीर्णोद्धार करें, क्योकि नये मंदिरों में अनन्त साधना के बाद अतिशय होता है और इन प्राचीन तीर्थों पर हमारे अनेक मुनियों और तपस्वियों नें साधना कर इस क्षेत्र को अतिशय बनाया है । हम इन धरोहरों को सहेजकर रखें तभी हम अपने नई पीढी को ऐसे अतिशय क्षेत्रों को सोंप पायेगें। यह उद्गार आज बुधवार को अतिशय क्षेत्र पनिहार में आयोजित भगवान आदिनाथ के महामस्तकाभिषेक महोत्सव में राष्ट्रसंत मुनिश्री पुलक सागर जी महाराज ने दिये ।

मुनिश्री ने कहा कि एक ऐसा स्थान जिस पर कुछ समय पहले पशु बंधते थे वहां आज फिर से परमेश्वर विराजे हैं, शिवपुरी के प्रकाशचन्द जैन, स्वरूपचन्द्र जैन ग्वालियर के प. अजीतकुमार शास्त्री एवं सम्पूर्ण कमेटी के मन में यदि इस क्षेत्र के विकास की योजना आई है तो निश्चित ही किसी जन्म में इन्होंने इस क्षेत्र की नींव रखने में रखी होगी, इस कमेटी के सभी सदस्यों को मेरा आशीर्वाद है।

प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार से मिलता है असीम पुण्य
सौ मंदिर बनाने से अच्छा एक प्राचीन तीर्थ का जीर्णोद्धार
भारत के नक्शे पर चमकेगा बरई पनिहार तीर्थ
ग्वालियर के कण कण बसी है जैन संस्कृति
– मुनिश्री पुलकसागर

उन्होंने कहा कि एक समय आयेगा कि ग्वालियर के चहूं ओर प्राचीन तीर्थों के दर्शन होंगे, कहीं गोपाचल, कहीं सिद्धाचल, कहीं पनिहार तो कहीं बरई, इन तीर्थों के दर्शन कर लो तो तुम्हारी चारों धाम की तीर्थ वंदना हो जायेगी ।

मुनिश्री के आगमन पर अतिशय क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष स्वरूपचन्द्र जैन, सचिव प्रकाशचन्द्र जैन, सुरेशचन्द्र जैन गत्तेवाले, प्रदीप जैन मामा भोपाल, मीडिया संयोजक ललित जैन, महेन्द्र कुमार जैन, नेमीचन्द्र जैन एडवोकेट, राजीव जैन हीरालाल जैन ने मुनिश्री के चरणों में श्रीफल अर्पित कर किया मंगलाचरण की प्रस्तुति प चन्द्रप्रकाश चन्दर ने दी, कार्यक्रम का संचालन ललित जैन ने किया।

खुदाई में निकली प्रतिमाओं को देख मुनिश्री हुए मंत्रमुग्ध – पनिहार की भूमि में खुदाईका जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमाऐं निकाली गई थी उनके दर्शनकर मुनिश्री मंत्रमुग्ध हो गये, और कहा कि ऐसी कलाकृति और अतिशयकारी प्रतिमाओं के दर्शनकर धन्य हो गया । बस अब तो इस धरोहर को सहेजकर रखने का व्यवस्थित व्यवस्था करना है। जिससे हमारी प्राचीन संस्कृति सुरक्षित रह सके ।

108 कलशों से भगवान का किया महामस्तकाभिषेक –

धन्य धन्य वह लोग जो आकर करते है अभिषेक महामस्तकाभिषेक श्री आदिनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक भजन के शुरू होते ही मुनिश्री के मंगल सान्निध्य एवं प. अजीतकुमार जैन शास्त्री के मार्गदर्शन में आज सैकडों श्रध्दालुओं ने पीले वस्त्र धारणकर भगवान आदिनाथ की अतिप्राचीन प्रतिमा का 108 कलशों से अभिषेक किया,

इन्होंने किया अभिषेक – महोत्सव में प्रथम कलश से राजकुमार जैन शिवपुरी, द्वितीय कलश से योगेश जैन मुरार ने तथा अनिल शाह, ललित जैन मुरार, अजय जैन, रविन्द्र जैन, वीरेन्द्र कुमार जैन, रविकुमार जैन, अशोक जैन, राजेश जैन लाला, सुमतिचन्द्र जैन, धरम वरैया, दिनेश जैन, सुरेश जैन, दिलीप जैन, हर्षित जैन, जयदेव जैन, वीरेन्द्र जैन डबरा, संजय जैन, चक्रेष जैन, अनिल जैन, महेष जैन, सोनू जैन, सुभाषचन्द्र जैन सहित अन्य श्रध्दालुओं ने भगवान का अभिषेक. किया ।

– ललित जैन, मीडिया प्रभारी, आयोजन समिति

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं ।

कुन्दकुन्द भारती में वैशाली सम्मान समारोह

नई दिल्ली- धार्मिक कार्यों में सेवा कार्यों से दूसरों की भलाई के साथ-साथ स्वयं का कल्याण स्वतः ही हो जाता है। जीवित रहने के लिए सेवा भाव आवश्यक है। उक्त शब्द श्वेत पिच्छाचार्य श्री विद्यानंदजी मुनिराज ने कुन्दकुन्द भारती में आयोजित एक सम्मान समारोह में व्यक्त किये। आचार्यश्री ने कहा कि भगवान महावीर की जन्मभूमि विदेह, कुंडपुर, वैशाली है यहाँ पर भगवान महावीर स्वामी का भव्य मंदिर का निर्माण किया जा रहा है।

इस अवसर पर ऐलाचार्य श्री श्रुतसागरजी ने कहा कि वैशाली में जो भगवान महावीर स्वामी जी का विशाल एवं भव्य स्मारक बन रहा है उससे विश्व भर में भगवान के अहिंसा, अनेकांत एवं अपरिग्रह सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार होगा। इन्हीं सिद्धांतों से विश्व की समस्याओं का समाधान संभव है। ऐलाचार्य प्रज्ञासागरजी ने भी समाज सेवा पर प्रकाश डाला। समारोह में गणिनी आर्यिका प्रज्ञमती माताजी भी विराजमान थी।

भगवान महावीर स्मारक समिति वैशाली के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री स्वदेशभूषण जैन ने कहा कि भगवान महावीर जन्मभूमि को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाने की आवश्यकता है। हमें देश विदेश के सभी पर्यटकों का ध्यान वैशाली की ओर आकर्षित करना होगा- जिससे यह स्थान एक ऐतिहासिक दर्शनीय व पर्यटन का स्थान बने।

मुख्य संरक्षक साहू श्री अखिलेश जैन एवं निर्माण उपसमिति के अध्यक्ष श्री राकेश जैन ने भी स्मारक की महत्ता पर प्रकाश डाला व निर्माण कार्य में सभी प्रकार के सहयोग का आग्रह किया, वित्त उपसमिति के चेयरमैन श्री सतीश जैन ने कहा कि समाज को तन-मन-धन से इसके निर्माण में सहयोग करना चाहिए।

इस अवसर पर भगवान महावीर जन्मभूमि वैशाली में मंदिर निर्माण में सहयोग देने वाले श्री कैलाश पांड्या पटना, श्री सुरेन्द्र जौहरी, अर्जुन जौहरी, नरेन्द्र जैन, पवन जैन महागुन, सुरेशचंद जी, लालचंद जैन, सतीश जैन, प्रीति हौजरी, श्रीपाल जैन, राजेन्द्र जैन, सतीश जैन ज्वालापुर, अनिल जैन नेपाल, डॉ. वीर सागर जैन, स्वराज जैन (टाइम्स ऑफ इंडिया), सुधीर जैन, हेमचंद जैन रिषभ विहार, महावीर प्रसाद, सुखमालचन्द जैन, नरेशचन्द्र जैन, विजय जैन, अजय जैन- वसंत कुंज, अनिल जैन (साड़ी वाले) दरियागंज, मुकेश जैन, राकेश जैन, रमेश जैन-ग्रीन पार्क, महिला जैन समाज शालीमार बाग, अशोक-मुक्ता जैन संस्कृति, संगीतकार प्रदीप जैन आदि 40 व्यक्तियों को वर्धमान महावीर की प्रतीक काम्य मूर्ति भेंटकर सम्मानित किया गया।

- स्वराज कुमार जैन (टाइम्स आफ इंडिया), नई दिल्ली

प्रो. श्रीमती आरती जैन को पी-एच.डी. की उपाधि

दमोह। रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर ने प्रो. श्रीमती आरती जैन पत्नी श्री सुधांशुराज जैन को रसायन-शास्त्र विषय के अंतर्गत उनके शोध कार्य 'Sorptive Removal of certain Inorganic & Organic toxins from simulated water samples by using spent tea leaves as sorbent' पर पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की है। इन्होंने अपना शोध कार्य डॉ. एस. के. वाजपेयी के निर्देशन में किया। आप वर्तमान में श्री राम इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी जबलपुर के प्राध्यापिका के पद पर कार्यरत हैं। आप श्री राजकुमार जैन व श्रीमती अनुराधा जैन की पुत्रवधू एवं स्व.श्री के.सी.भंडारी एवं श्रीमती सरोज भंडारी, दमोह की पुत्री हैं। इन्होंने अपनी सफलता का श्रेय अपने निर्देशन एवं परिवार को दिया है।

स्मरणीय है कि प्रो. श्रीमती आरती जैन, दमोह की बेटी तो हैं ही, उनका सम्पूर्ण अध्ययन दमोह नगर में ही हुआ। दमोह के शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में अध्ययन करके रसायन शास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि भी प्राप्त की है। अनेक शिक्षाविदों, शुभचिंतकों और संस्थाओं के प्रमुखों ने उनकी इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाइयाँ दी हैं।

- श्रीमती सरोज सांधेलीय, दमोह (म.प्र.)

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

जिन धर्म गुणों की उपासना करता है व्यक्ति की नहीं।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन का 30 जून से 4 जुलाई, 2014 तक पूर्वांचल के तीर्थक्षेत्रों का दौरा

३० जून, २०१४ को तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नीलम जैन, शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री छीतरमल पाटनी सपत्नीक, हजारीबाग; पूर्वांचल कमेटी के मंत्री श्री ज्ञानचन्द जैन, गिरिडीह एवं शिखरजी कार्यालय के सहायक श्री पवन शर्मा, शिखरजी से यात्रा प्रारम्भ की।

देवघर दिगम्बर जैन मंदिर दर्शन : सर्वप्रथम यात्रा संघ बैजनाथ धाम-देवघर पहुंचा। वहाँ के मंदिर के दर्शन, पूजन के पश्चात श्री दिगम्बर जैन समाज, देवघर के श्री ताराचन्द जैन, चेयरमैन-झारखण्ड राज्य दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड एवं वहाँ के समाज के अध्यक्ष, मंत्री द्वारा यात्रा संघ का आत्मिक स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। समाज के अध्यक्ष जी ने देवघर के महत्व के बारे में जानकारी दी और बताया कि यह नगरी शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर मधुबन एवं भ. वासुपूज्य के पाँचों कल्याणकों की भूमि चंपापुर के मध्य में स्थित होने से सभी यात्री इस तीर्थ पर पड़ाव कर चंपापुर के लिए प्रस्थान करते हैं। इसलिए यह तीर्थ यात्रियों, मुनियों एवं श्रावकों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्होंने सात आधुनिक सुविधायुक्त सुसज्जित कमरों के निर्माण हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष को प्रस्ताव दिया। उन्होंने पूर्वांचल कमेटी में इस विषय पर विचार कर निर्णय लेने का आश्वासन दिया। साथ ही देवघर मंदिर प्रांगण में झारखण्ड राज्य दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड के सौजन्य से लगाये गये वाटर कूलर का राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन द्वारा उद्घाटन किया गया। उनका साथ श्री छीतरमलजी पाटनी, श्री ज्ञानचंद जैन एवं श्री ताराचन्द जैन ने दिया।

मंदारगिरि पर्वत दर्शन : देवघर से मंदारगिरि क्षेत्र पहुंचने पर वहां की कमेटी ने यात्रा संघ का स्वागत किया तथा उन्हें भ. वासुपूज्य की मोक्ष स्थली के इस पवित्र तीर्थधाम का परिचय कराया। उन्होंने तीर्थक्षेत्र कमेटी के सहयोग से निर्माणाधीन आचार्य विमल भरत सागर सरस्वती भवन का उद्घाटन करने हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष से अनुरोध किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा उद्घाटन के पश्चात यात्रा संघ चंपापुर के लिए प्रस्थान किया और सायंकाल करीब ६.०० बजे चंपापुर पहुंचा।

दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र चंपापुर : रात्रि विश्राम के पश्चात सुबह ६.३० बजे सिद्धक्षेत्र चंपापुर के सभी मंदिरों के दर्शन-पूजन किये, पश्चात वहां की कमेटी के पदाधिकारियों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं यात्रा संघ के सभी महानुभावों का गर्मजोशी से स्वागत किया। वहाँ विराजमान मुनिश्री १०८ पुण्य सागरजी महाराज के दर्शन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर नवादा के लिए प्रस्थान किया।

नवादा दिगम्बर जैन मंदिर : अपराह्न करीब ३.०० बजे यात्रा संघ जैसे ही नवादा पहुंचा, वहाँ की कमेटी ने यात्रा संघ का पुष्पहार से स्वागत किया। पश्चात यात्रा संघ वहां के दिगम्बर जैन मंदिर के दर्शन किये। उन्हें यह बताया गया कि यह मंदिर काफी लम्बे समय से विवादों के घेरे में है। विवादित मंदिर और धर्मशाला जो सरकार के कब्जे में है उस पर दुःख व्यक्त किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने विवाद से संबंधित कागजात भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी कार्यालय मुंबई को भिजवाने का अनुरोध किया और यह आश्वासन दिया कि इन कागज़ातों का अध्ययन कर ठोस कार्रवाई की जावेगी। पश्चात यात्रा संघ गुणावाजी क्षेत्र के लिए प्रस्थान किया।

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गुणावा जी : गुणावा जी क्षेत्र पहुंचने पर वहां की कमेटी ने यात्रा संघ का सम्मान एवं अभिनंदन किया। मंदिर जी के दर्शन कर सभी अत्यन्त प्रभावित हुए। पश्चात यात्रा संघ पावापुरी के लिए प्रस्थान किया।

सिद्धक्षेत्र पावापुरी मंदिर के दर्शन : सायंकाल करीब ६.०० बजे यात्रा संघ पावापुरी पहुंचा। वहाँ पूर्वांचल समिति के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल सेठी एवं स्थानीय कमेटी के पदाधिकारियों ने यात्रा संघ का सम्मान एवं अभिनंदन किया। रात्रि विश्राम किये।

कमल मंदिर दर्शन : २ जुलाई, २०१४ को प्रातः ६.०० बजे यात्रा संघ कमल मंदिर में सभी लोगों ने धर्मलाभ लेते हुए मंदिर में दर्शन, पूजा-प्रक्षाल, अर्चना किये। पश्चात स्वल्पाहार कर कुण्डलपुर तीर्थ के दर्शन के लिए निकल पड़े।

श्री कुण्डलपुर क्षेत्र : यहां बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री अजय कुमार जैन सपत्नीक यात्रा संघ का स्वागत किया। पश्चात दर्शन, पूजन, प्रक्षाल किये। श्री अजय कुमार जी ने वहां के आसपास की जमीनों की उपयोगिता के बारे में राष्ट्रीय अध्यक्ष से विचार-विमर्श किये। पश्चात राजगिरि क्षेत्र के लिए प्रस्थान कर गये।

राजगिरि क्षेत्र के दर्शन : यात्रा संघ कुण्डलपुर से प्रस्थान कर अपराह्न करीब २.३० बजे राजगिरि क्षेत्र पहुंचा। वहां की कमेटी ने सभी पदाधिकारियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। यात्रा संघ ने छात्रों के शिक्षा के लिए कम्प्यूटर एवं सरस्वती भवन के ऊपर बनाये गये हॉल एवं सरस्वती भवन के जीर्णोद्धार हेतु भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई से प्राप्त सहयोग की जानकारी दी तथा निर्माणाधीन आचार्य विमल भरत सरस्वती भवन का उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन के द्वारा किया गया।

राजगिरि क्षेत्र की पंच पहा.डी मंदिरों के दर्शन : यात्रा संघ ने पंच पहाड़ी के दर्शन किये। श्री अजय कुमार जैन ने वहां की सुरक्षा के संबंध में सी.सी.टी.वी. कैमरा लगाने के बारे में व्यवस्थापकों से बातचीत की और प्राकृतिक पत्थरों के नीचे स्थापित प्रभु के चरणों की महिमा का गुणगान किया एवं अर्घ्य चढ़ाये। पश्चात विरायतन का दर्शन, भ्रमण किया गया। रात्रि विश्राम राजगिरि में हुआ।

कोल्हुआ पहाड दर्शन : ३ जुलाई, २०१४ को यात्रा संघ कोल्हुआ पहाड़ के दर्शन हेतु पहुंचे। वहां श्री पूर्वांचल समिति के कोषाध्यक्ष दानवीर श्री महावीरप्रसादजी सोगानी, रांची ने यात्रा संघ का शॉल, दुपट्टा पहनाकर सभी का स्वागत एवं अभिनंदन किया। पूर्वांचल समिति के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल सेठी ने बताया कि इस क्षेत्र के विकास में श्री महावीरप्रसादजी सोगानी का प्रशंसनीय सहयोग मिल रहा है उनके अथक प्रयास से क्षेत्र का संचालन हो रहा है। कोल्हुआ पहाड़ की प्राकृतिक छटा काफी मनमोहक है। यहां यात्रियों का आवागमन कम होने से क्षेत्र का विकास पिछड़ा हुआ है। उन्होंने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से कोल्हुआ पहाड़ के विकास के लिए सहयोग देने की अपील की। राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने यह आश्वासन दिया कि क्षेत्र के विकास के बारे में अवश्य विचार किया जावेगा।

दिनांक ४ जुलाई, २०१४ को प्रातः ६.०० बजे यात्रा संघ गुलजारबाग पटना में सेठ सुदर्शन के चरण-चिह्नों के दर्शन किये तथा अपनी यात्रा के समापन की जानकारी देते हुए सभी को इस भ्रमण कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग देने के लिए धन्यवाद दिया और पटना स्टेशन से कटनी के लिए रवाना हो गये।

- सुमन कुमार सिन्हा

वाणी को वीणा बनायें, बाण नहीं।

बिहार-झारखंड दौरे की झलकियाँ

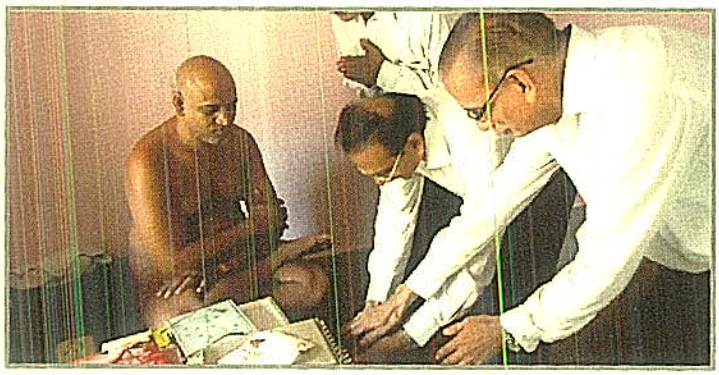

भागलपुर क्षेत्र, मुनिश्री 108 पुण्य सागरजी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन

भगवान महावीर की केवल्यधाम जमुई क्षेत्र का दर्शन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन एवं स्थानीय समिति के पदाधिकारीगण।

यात्रा संघ सिद्धक्षेत्र चम्पापुर का दर्शन करते हुए

यात्रा संघ सिद्धक्षेत्र चम्पापुर का दर्शन करते हुए

यात्रा संघ सिद्धक्षेत्र कमलदह क्षेत्र का दर्शन करते हुए

कुण्डलपुर क्षेत्र का अवलोकन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन, कटनी; पूर्वांचल के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल सेठी, श्री छीतरमल पाटनी आदि महानुभाव।

श्री कुण्डलपुर क्षेत्र का दर्शन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन, बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री अजय कुमार जैन, आरा एवं यात्रा संघ के सदस्यगण।

धर्म केवल मंदिर में हीं, मूक प्राणियों के ऊपर दया करना भी धर्म है ।

बिहार-झारखंड दौरे की झलकियाँ

श्री नवादा क्षेत्र का दर्शन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन। उनके साथ खड़े हैं स्थानीय कमेटी के सदस्यगण एवं क्षेत्र के प्रबंधक।

मंदारगिरि क्षेत्र

मंदारगिरि क्षेत्र

मंदारगिरि क्षेत्र

मंदारगिरि क्षेत्र

देवघर क्षेत्र

देवघर क्षेत्र में झारखण्ड न्यास बोर्ड की ओर से लगाये गये वाटर कूलर का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन।

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये ।

बिहार-झारखंड दौरे की झलकियाँ

पावापुरी क्षेत्र

पावापुरी क्षेत्र

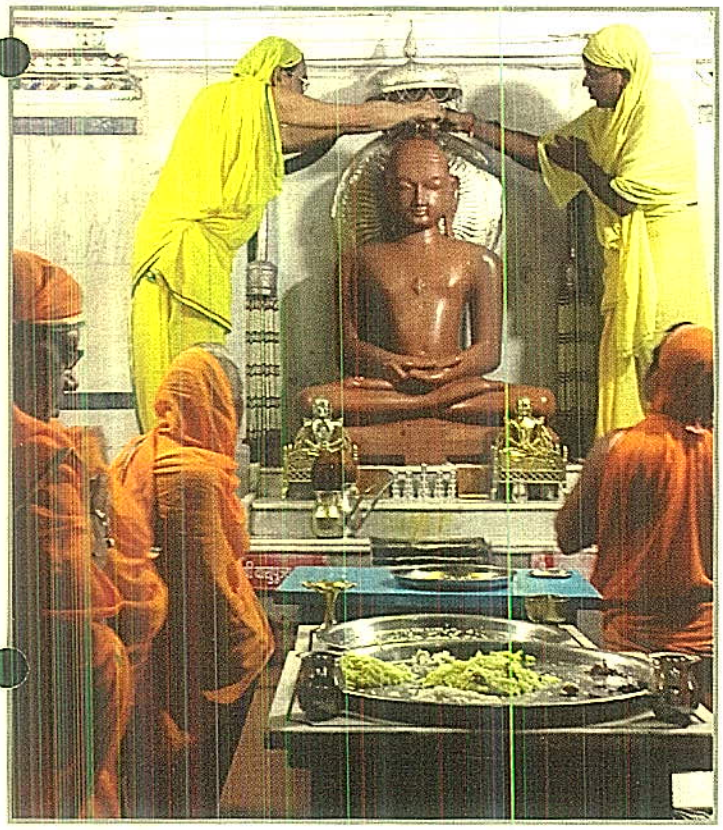

पावापुरी क्षेत्र

पावापुरी क्षेत्र

राजगृही क्षेत्र

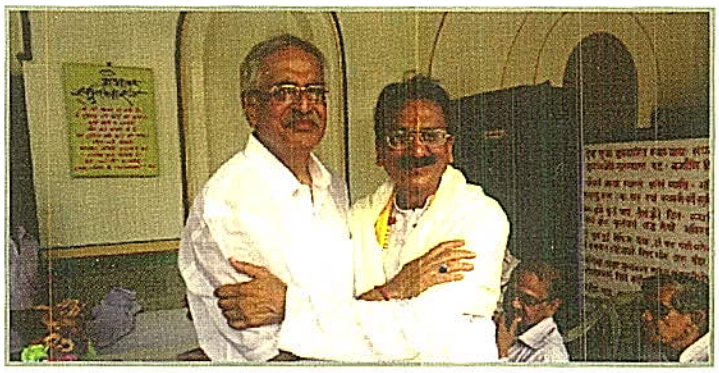

राजगृही क्षेत्र

जीवन को उन्नत और ऊँचाई पर ले जाने के लिए धर्म ही एकमात्र साधन है।

बिहार-झारखंड दौरे की झलकियाँ

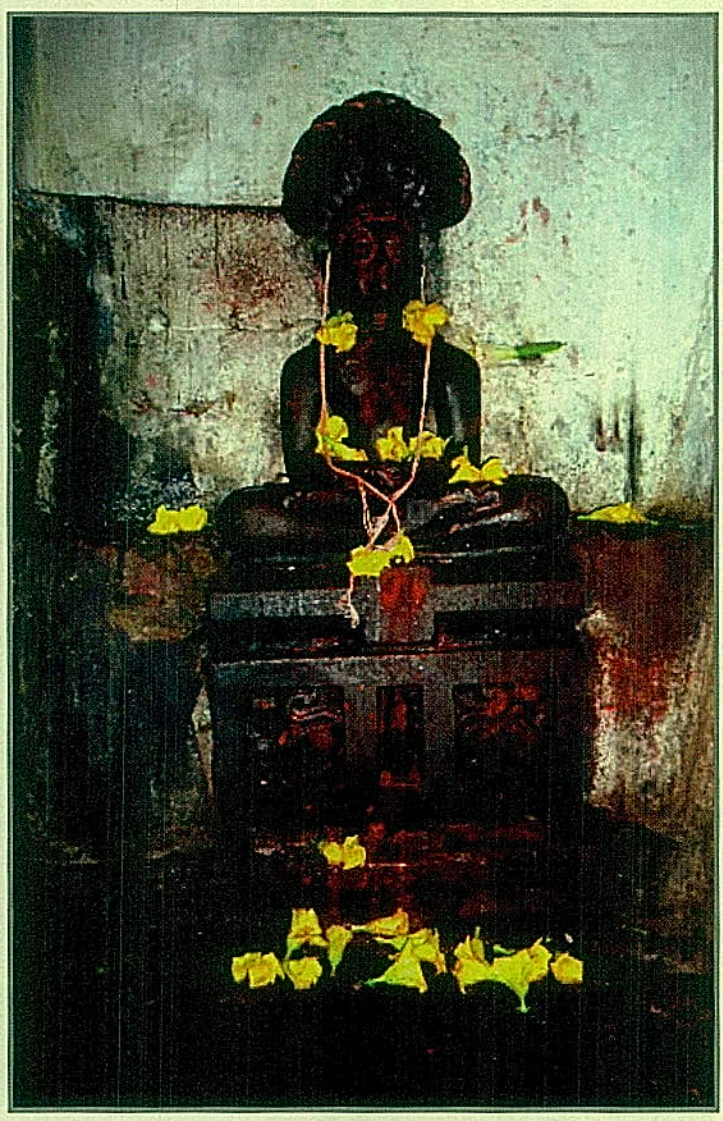

कोल्हुआ पहाड़ क्षेत्र

कोल्हुआ पहाड़ क्षेत्र

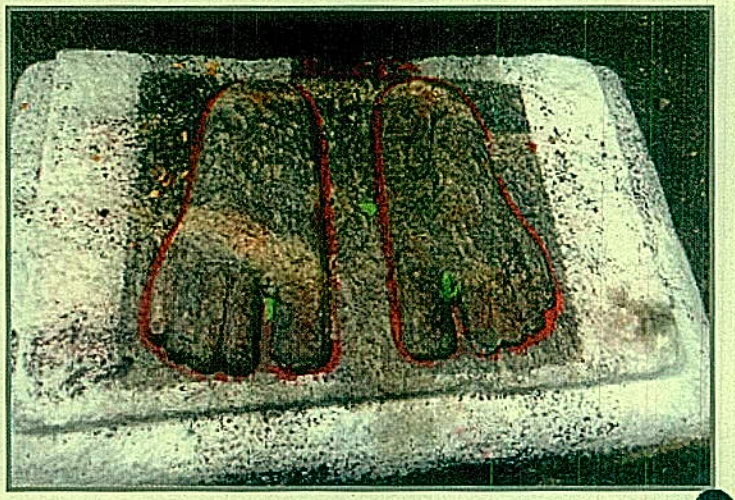

कोल्हुआ पहाड़ क्षेत्र

कोल्हुआ पहाड़ क्षेत्र

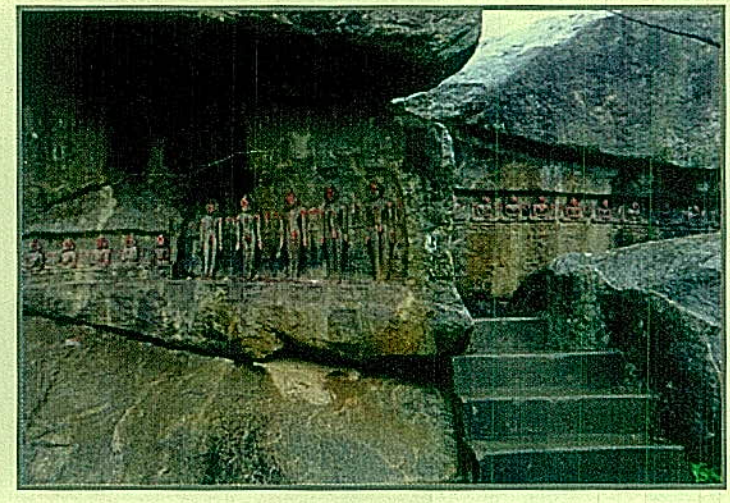

कोल्हुआ पहाड़ क्षेत्र

क्रिया सहित धर्म कभी निष्फल नहीं होता।

दिल्ली चली-धर्म की रेल

पहली जुलाई 2014 से जैन संतों का दिल्ली की विभिन्न कालोनियों मे विहार शुरु हो गया। कुछ के चातुर्मास पहले से ही कुछ के प्रथम सप्ताह में नियत हो गए थे। इधर बादलों की लुका-छिपी चलती रही। उमस के इन दिनों में कभी बादल खुलकर संतों के आगमन का स्वागत करते है तो कभी बंद आंखों से और कभी-कभी रिमझिम फुहारों से अभिवादन करते। इधर पेड़ों की लताएं झुक झुककर मंगल निनाद करती तो वृक्ष हाथ जोड़कर अभिवादन करते। जैसा कि आप जानते हैं वर्षाकाल में आषाढ़ सुदी अष्टमी व चतुर्दशी अथवा श्रावण वदी पंचमी तक साधकों को जीव रक्षा व्रत के पूर्ण पालन हेतु एक स्थान पर रुकना आवश्यक है, क्योंकि वर्षाकाल में वर्षा होने से जीवों की प्रचुर मात्रा में उत्पत्ति हो जाती है, जिससे मार्ग में सचित्त होना पड़ता है, स्थूल व सूक्ष्म जीवों का घात विहार के माध्यम से संभव है। अतः वे दिगम्बर संत कार्तिक मास की अमावस्या या पंचमी या पूर्णमासी पर्यंत एक स्थान पर ठहर कर ही अपनी संयम साधना व आत्म ध्यान रूप तपस्या को वृद्धिगत करते हैं।

कुन्द-कुन्द भारती। कृष्णानगर, यमुनापार का दिल है यहां चारों ओर दिगम्बर संतों के चातुर्मास हैं यो पूरी दिल्ली चली धर्म की रेल आओ हम रेल में सर्व प्रथम चलते हैं कुन्दकुन्द भारती श्वेतापिच्छाचार्य श्री विद्यानन्द मुनिराजजी के दर्शन को एक ओर खारवेल भवन है। दूसरी ओर भरत का मन्दिर। प्रवेश द्वार पर अन्दर आते ही साहू अशोक कुमार जैन की मूर्ति जो उनकी सामाजिक सेवाओं की स्मृति है और तीन दिशाओं में अशोक के घने वृक्ष जो सौम्य आकृति लिए हर किसी का अभिवादन करते हैं।

गणित शास्त्र में योग का अर्थ है जोड़, यानी वृद्धि और वर्षा के समय इस योग में आत्मासाधना में वृद्धि करें। श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज वर्षायोग के प्रति कहते हैं कि चातुर्मास में अनेक दिन और पूरा भाद्रपद मास पवित्र व्रतों, पर्वों और सांस्कृतिक आयोजनों के होते हैं, जिनमें स्थान विशेष पर मुनियों, आचार्यों और अन्य त्यागीवर्ग की नियमित समुपस्थिति से धार्मिक उत्सवों का वातावरण अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है। स्थान-स्थान पर शास्त्र-प्रवचनों का आयोजन होता है और एकत्र हुए श्रावक वर्ग को धर्म प्रभावना का विशेष लाभ मिलता है।

दिल्ली ही नहीं, कई बड़े शहरों में रविवार को ही चातुर्मास की स्थापना की जा रही है। यही कारण है कि इस बार 6 व 13 के साथ 20 जुलाई और कुछ जगह 11 व अन्य तिथियां चातुर्मास स्थापना के लिए नियत हैं। क्या सण्डे ही स्थापना आगम सम्मत है।

इस बारे में श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज का कहना है कि आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी को तीसरा पहर। यही कारण है कि आचार्य श्री 51वें चातुर्मास की स्थापना शुक्रवार को सायं 4 बजे कर रहे हैं, यानी हमेशा की तरह आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को सायंकाल में।

उनके अनुसार जहां चातुर्मास स्थापित करना अभीष्ट हो, वहां आषाढ़ मास में ही पहुंच जाना निहित है। यदि किसी कारणवश आषाढ़ मास में न पहुंच सके तो श्रावण कृष्णा पंचमी तक अवश्य पहुंच जाना चाहिए यानी, अधिकतम पांच दिन और मिलते हैं।

मुनि स्वाध्याय सम्मेलन

माडल टाऊन। पिछले कुछ वर्षों से प्राकृत भाषा का गहन अध्ययन कर रहे एलाचार्य श्री प्रज्ञ सागर जी महाराज ने इस चातुर्मास में दशलक्षण महापर्व के बाद पांच दिनों के मुनि स्वाध्याय सम्मेलन 18 से 22 सितंबर तक कराने का विचार किया है, जिसमें विद्वानों के साथ साधु मॉडल टाउन में एकत्रित होकर एक-एक विषय पर ज्ञानार्जन करेंगे व अपने अनुभव बांटेंगे। जैन इतिहास, जैन कला, करुणानुयोग, जैन भूगोल, प्राकृत भाषा, संस्कृत भाषा, अध्यात्म, न्याय, नयों का ज्ञान, कर्म विज्ञान, जैन गणित, कथा - काव्य साहित्य, चरणानुयोग, क्रिया काण्ड, सिद्धान्त, धार्मिक प्रवचन कला, जैन ज्योतिष, वास्तु, मंत्र-तंत्र विधि आर्ट, जिनमें भी जो साधु सम्पूर्ण ज्ञान रखते हैं, वह सबको उसके बारे में बताएंगे। साधु भी जो पढ़ना चाहते हैं, उन्हें भी इसमें आमंत्रित किया जायेगा।

तीर्थ क्षेत्रों को गोद देने की परम्परा

ग्रीनपार्क। एलाचार्य श्री श्रुतसागर जी महाराज का कहना है कि फिलहाल तो 35 दिनों तक 35 अक्षर वाले महा अपराजित मंत्र णमोकार का पाठ आयोजित कराने का निर्णय लिया है। रोजाना उच्चारण सहित सस्वर प्रातः एक घंटे पाठ और एक घंटे जाप किया जायेगा।

उनके साथ तीर्थों के संरक्षण की चर्चा चल पड़ी। उन्होंने अतीत को याद दिलाते हुए कहा कि एक दिन तुम्ही ने शिखर जी में शाश्वत ट्रस्ट द्वारा शाश्वत भवन की नींव रखने के लिए रथ प्रवर्तन के लिए आशीर्वाद लिया था। आज शिखरजी में शाश्वत भवन यात्रियों के लिए सर्वोच्च है। मेरा मानना है प्रत्येक प्रभावक मुनि को प्राचीन तीर्थ गोद दे देने चाहिए ताकि सभी तीर्थों का संरक्षण संवर्धन और विकास भरपूर हो सके।

अब की बार अपने लिए

कृष्णानगर। अब तक चातुर्मास समाज के लिए किये, पर अबकी बार चातुर्मास स्वयं के लिए कर रहा हूं, कहते हुए एलाचार्य श्री अतिवीर जी महाराज ने स्पष्ट संकेत कर दिया कि अब वे दिखावे व आडम्बरों में जीना नहीं चाहते। उनकी इन पंक्तियों के साथ वे दिन अचानक ही मन की सुप्त पड़ी ग्रन्थि में उजागर हो गये, जब उन्होंने पिछले शक्ति नगर चातुर्मास के निष्ठापन समारोह में कहा था कि भविष्य में उनके चातुर्मास की स्थापना व निष्ठापन बिना लम्बे चौड़े आयोजनों के होगी। जहां तक याद पड़ता है तो यही जान पाते हैं कि एलाचार्य श्री के वर्षायोग स्थापना शुरुआत से निष्ठापन तक इतनी विशालता लिये होती थी, कि वे चर्चा का विषय बन जाते थे। इसमें यह भी सच है कि इन सबके पीछे एक बड़ी राशि व्यय होती और यही कारण है कि 'अतिवीर' का चातुर्मास कराने के लिए समाज को चार बार सोचना पड़ता था और इस बार कृष्णानगर में सारे आडम्बरों, शोबाजी को दूर करते हुए मंदिर में ही सादगी व धार्मिक परम्पराओं के साथ स्थापना की जाएगी।

राजा भी रखते थे चातुर्मास

बसंतकुंज। आचार्य श्री आनंद सागर जी मौनप्रिय ने कुछ यूं ही शुरुआत की, चर्चा की। वर्षायोग को योगभक्ति में प्राकृत में कहा है, यानी पावस काल। रामचरित मानस में तुलसीदासजी ने वर्षाकाल को पावस काल ही कहा है। जैन, बौद्ध, वैदिक तीनों में ही वर्षायोग की धारणा है, अंतर बस यह है कि वो केवल दो माह श्रावण-भाद्रपद में वर्षायोग करते हैं। दिगम्बरों में यह 105 दिनों का तथा श्वेताम्बरों में पूर्णमासी से पूर्णमासी तक 120 दिनों का होता है।

संतों को जंगल में चातुर्मास क्यों नहीं करना चाहिए। लम्बी चर्चा के बाद उनका कहना था यह पंचम काल है, इससे असमय समाधि का डर है। इसलिए उन्हें चैत्यालयों में, मंदिरों में, तीर्थों में, नगरों में चातुर्मास करना चाहिए।

श्रावक साधना शिविर

इन्दिरापुरम। दिल्ली में गुड़गांव सहित नौ जगह मंदिरों के निर्माण की नींव और चार जगह पंचकल्याणक करवाने के बाद अब इंदिरापुरम में श्री पार्श्वनाथ जिनालय के मूर्त रूप देने के लिये इस चातुर्मास को मुनि श्री विहर्ष सागर जी ससंघ ने समर्पित कर दिया है। चांदबाग भजनपुरा, खजूरी, शालीमार गार्डन, जयप्रकाश नगर, गुड़गांव आदि उन जगहों पर मंदिरों की नींव डाली जहां जैन परिवार तो है पर शायद उतने सामर्थ्यवान नहीं।

यह जानकारी देते हुए मुनि श्री विहर्ष सागर जी ने इस चातुर्मास की पूरी योजनाओं का खाका खींच दिया। उन्होंने बताया कि इंदिरापुरम चैत्यालय के लिए 7.7 फुट की पदमासन मूर्ति तैयार हो रही है, जो एनसीआर क्षेत्र की सबसे बड़ी मूर्ति होगी। यहां पर चातुर्मास में 48 दिनों का भक्तामर शिविर होगा, साथ ही पूजन शिविर और दस दिनों के पर्यूषण में श्रावक साधना शिविर भी होगा।

हां, मैं लेपटॉप वाला महाराज हूं

पालमगांव। तीन साल पूर्व 20 पिच्छियों को लेकर आचार्य श्री सिद्धांत सागर जी महाराज ने दिल्ली में प्रवेश किया था। पिछले वर्ष उपाध्याय शशांक सागर जी दिल्ली से बाहर विहार कर गये और उपाध्याय सौभाग्य सागर जी दिल्ली में अलग चातुर्मास,आचार्य श्री के आदेश व अनुमति से, कर रहे हैं। फिर भी एकल विहार करने वालों को पसंद करने वाली दिलों की इस धर्मनगरी में आचार्य श्री ने ससंघ अपनी जगह बना ली है।

हां, आप कह सकते हैं कि मैं लेपटॉप वाला महाराज हूं। मेरी कलम और कागज यही है। मैं स्वयं इस पर लिखता हूं, किसी दूसरे पर बोझ नहीं बनता। रोज इसी से दैनिक पत्रिका निकालता हूं, चाहे चार, दस या बीस, जितने पढ़ने वाले हों उतनी और सुनो, इसमें 2000 शास्त्रों का भण्डार है। आपको कहीं इतने ग्रंथ सहजता से नहीं मिल सकते और मैं सदा अपने साथ रखता हूं। मुझे कई जगह शास्त्र उपलब्ध नहीं होते, शंकाओं का समाधान यही करता है।

नई चेतना का होता है संचार

न्यू रोहतक रोड। *उपाध्याय सौभाग्य सागरजी* कहते हैं संतों के चातुर्मास पर नई प्रकार की चेतना का संचार होता है। बाल, वृद्ध आबाल, सब लोगों में धर्म करने की होड़ लगी रहती है और चातुर्मास काल में ही गुरु पूर्णिमा, वीर शासन जयंती, मुकुट सप्तमी पर्व, रक्षाबंधन पर्व, सोलहकारण पर्व, रोड तीज, पयुर्षण महापर्व, क्षमावाणी, दशहरा, धनतेरस, दीपावली आदि अनेक महापर्वों का गुरु सान्निध्य में श्रावकों को लाभ प्राप्त होता है। चातुर्मास में जहां संतगण साधना में लीन रहते हैं, वहीं श्रावकों को भी धर्म आराधना करने का अवसर प्राप्त होता है।

ज्ञान एक ऐसा धन है, जो मन को भी अपने वश में कर लेता है।

कड़वे प्रवचनों का आनंद लो

रोहिणी सेक्टर-3। चौदह साल बाद दिल्ली में प्रवेश कर रहे मुनिश्री तरुण सागर जी ने कहा कि देखो! मुझे भजन गाना नहीं आता, मैं तो सिर्फ बजाता हूं समाज को। अपने कड़वे प्रवचनों से जापानी पार्क में हजारों को बजाने का, समझाने का, संवारने का, निखारने का प्रयास करेंगे मुनि श्री तरुण सागर जी।

इनके प्रवचनों में जो सत्य छिपा होता है, वह कहीं-न-कहीं आज लोगों के गलत व्यवहार को कुरेदने के कारण कड़वे प्रवचन के रूप में चिंतन, मनन करने को जरूर उद्धत करता है और यही कारण है कि जैन ही नहीं, अजैन भी हजारों की संख्या में इनके प्रवचनों को उन्हीं के मुख से सुनने को आतुर रहते हैं आपके चातुर्मास में। 151 चातुर्मास कलशों की स्थापना की है। प्रत्येक कलश की न्यौछावर राशि 1,11,000 मात्र है।

तीर्थ क्षेत्रों की, निशुल्क यात्रा

भोगल। उपा. श्री 108 ऊर्जयन्त सागर जी महाराज जी का 21 वां मंगल वर्षायोग श्री 1008 भ. महावीर स्वामी मंदिर जी में हो रहा है। उपा. श्री की मंगल कलश स्थापना 13 जुलाई रविवार दोपहर 1.30 बजे जैन मंदिर प्रांगण में बड़ी धर्म प्रभावना के साथ हुई। हर वर्ष की भांति भोगल जैन समाज द्वारा लक्की इनामी कूपन योजना रखी गई है, जिसमें 31 धर्म प्रेमियों को राजस्थान की 22 की बसों द्वारा जयपुर, सांगानेर, पद्म पुरा, चांद खेड़ी, महावीर जी की निःशुल्क यात्रा कराई जायेगी। निःशुल्क कूपन, कलश स्थापना के दिन वितरित किये जाएंगे, तथा कार्यक्रम के पश्चात् लक्की ड्रा निकाले जाएंगे।

अनपढ़ थे, तो अच्छे थे, पढ़ लिखकर, बिगड़ गये

निर्माण विहार। उपाध्याय श्री गुप्तिसागर जी महाराज का 37वां चातुर्मास निर्माण विहार में है। उन्होंने बुझे मन से कहा कि चारित्र के नाम पर विकास नहीं हो रहा। रात्रि भोजन का त्याग करना नहीं चाहते। बड़े-बड़े चातुर्मास हो जाते हैं, पर दो श्रावक नहीं बन पाते। आज तो श्रद्धा में इतनी गिरावट आ गई है कि कोई मुनि महाराज अचानक पहुंच जाए तो आहार व्यवस्था तक नहीं हो सकती। आज भक्त नाम के रह गये हैं, त्याग के नाम से घबराते हैं। उन्हें चाहिए कि साधुओं के पास आकर चातुर्मास के समय संयम की वृद्धि करें। अब तो जैन और अजैन में फर्क ही नहीं रह गया है।

वर्तमान में क्या उन्नति हुई धर्म के प्रति? इस सवाल पर उपाध्याय श्री एकमत थे। उन्होंने कहा उन्नति की बात करते हो धर्म के प्रति। अरे! पहले के लोगों को हम अनपढ़ गंवार कहते थे, पर वे धर्म के प्रति सजग थे, सच्ची श्रद्धा रखते थे। आज जब पढ़ लिख लिए हैं, तो धर्म की अवमानना हो रही है, श्रद्धा का ह्रास हो रहा है।

भव्यता में लुप्त होती ऊर्जा शक्ति

मास्टर ब्लाक, शकरपुर। क्षु. भक्तिभूषण हर वर्ष की भांति एक बार पुनः ज्ञान सरिता की मनमौजी तरंगों को चार माह तक एक जगह ठहराने का वक्त आ गय वे ज्ञान तरंगें जो कार्तिक अमावस के बाद से अपने मनानुसार विचरते हुए अपने ज्ञान से भरे मेघों को बरसाती हैं तो वही ज्ञान मेघ आठ माह के विचरण के बाद एक जगह पर बरसने के लिए अपनी सीमा बांध कर ठहर से जाते हैं।

कई जन्मों के पुण्य से मिलते हैं चातुर्मास

भोलानाथ नगर। प.पू. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ने भोलानाथ नगर में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश के अवसर पर कहा कि संत समागम और चातुर्मास बड़े पुण्य से मिलता है। चातुर्मास की यात्रा आत्म कल्याण की यात्रा है। संत समागम संसार में दुर्लभ है। कई जन्मों के पुण्यों से मिलते हैं वर्षायोग। जो वर्षायोग से जुड़ते हैं, वे परमात्मा से जुड़ते हैं। आचार्य श्री ने कहा कि संसारी प्राणी अपने स्वरूप को भूला हुआ है। गुरु हमें जगाने आते हैं। परमात्मा में और आप में कोई अंतर नहीं है, लेकिन बहुत बड़ा अंतर है। भगवान वीतरागी और हम रागी हैं। प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति है। आज का इंसान तो वित्तरागी (धन से राग करनेवाला) हो गया है।

शंकर नगर में पाठ चल रहा है

शंकरनगर। महावीर की अनुभूति बड़े मार्के की है कि ब्रह्मचर्य ही चित्त शांति का अविचल स्थल है। एक रात ब्रह्मचर्य रखने वाले पुरुष को उत्तम गति मिलती है वह हजारों यज्ञ करने से भी नहीं मिलती। (मुनि संकल्प भूषण)

शक्ति का संचय करना

नोएडा सेक्टर-27। वर्षायोग में संयम, तप, त्याग की अभिवृद्धि करना ही मुख्य उद्देश्य होता है। आठ महीने धर्म प्रभावना एवं चातुर्मास में आत्म प्रभावना का योग होता है। योग अर्थात जोड़ना होता है जो कि एकता का प्रतीक होता है। जो एक स्थान में रहकर अपनी साधना को बढ़ाता है।

आचार्य श्री सूर्यसागर महाराज,

चातुर्मास सै-50 नोएडा में

पूज्या आर्यिका श्री सकलमति माताजी का चातुर्मास 2014 श्री 1008 पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर सै-50, नोएडा में होने जा रहा है। आर्यिका श्री संघ का मंगल प्रवेश 7 जुलाई को चातुर्मास हेतु हुआ तथा 13 जुलाई को मंगल कलश स्थापना,

चातुर्गास में सबका मंगल हो

मुनि श्री शिव सागर जी

कैलाशनगर गली नं.-2। संपूर्ण दिगंबर जैन समाज से विनम्र निवेदन है कि त्यागी वर्ग बहुत ही कम खर्चे में साधारण रूप से प्रचार करने का प्रयास करें। प्रचार से ज्यादा खर्चा करने से समाज के धन का अपव्यय होता है।

इनके अलावा दिल्ली में निम्न चातुर्मास हो रहे हैं-

कैलाश नगर गली नं. 12- आचार्य श्री अनुभवनंदी जी एवं मुनि श्री प्रभावना भूषण जी
राधेपुरी- मुनि श्री प्रमुख सागर जी महाराज,
त्रिनगर- मुनि श्री विशोक सागर जी महाराज,
कबूल नगर, शाहदरा - मुनि श्री विभंजन सागर जी महाराज,
संगम विहार -मुनि श्री संकेत सागर जी महाराज,
छोटा बाज़ार, शाहदरा- मुनि श्री क्षीर सागर जी महाराज,
लोधी कॉलोनी - मुनि श्री सौम्य सागर जी एवं गणिनी आर्यिका श्री समतामति माताजी,
केशव पुरम- गणिनी आर्यिका श्री चन्द्रमति जी एवं आर्यिका श्री दक्षमति माताजी,
बी-40, शकरपुर- गणिनी आर्यिका श्री गुरुनंदनी माताजी,
शास्त्री नगर- आर्यिका श्री सम्यकश्री माताजी,
कर्मपुरा- क्षुल्लक श्री योग भूषण जी महाराज,
बुद्ध विहार- क्षुल्लक श्री विरंजन सागर जी महाराज,
चिराग दिल्ली - क्षु. श्री विदेह सागर जी एवं क्षु. श्री वीर सागर जी,
गौतमपुरी - क्षु. श्री सुगंध सागरजी
दिलशाद गार्डन -क्षुल्लिका श्री वीरमति माताजी

- संकलन / प्रस्तुति : श्री किशोर जैन, 95, रशीद मार्किट, दिल्ली-51 मो.: 9910690823

जहां धर्म रहता है वहां धन अपने आप बरसता है।

दिल्ली महानगर में चातुर्मास हेतु अनेक स्थानों पर विराजमान साधु परमेष्ठीगण

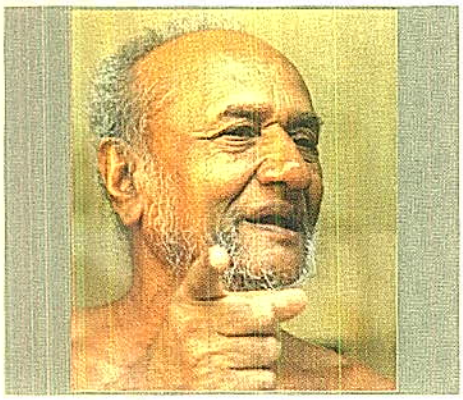

आचार्य विद्यानन्दजी महाराज

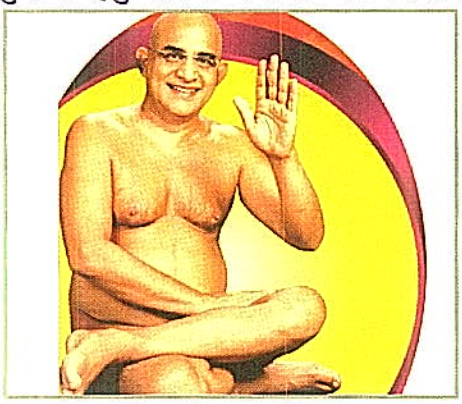

आचार्य गुप्तीसागरजी महाराज

आचार्य गुप्तीनन्दीजी महाराज

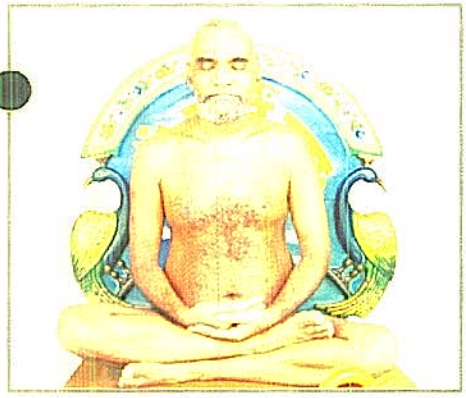

आचार्य श्री आनंदसागरजी महाराज

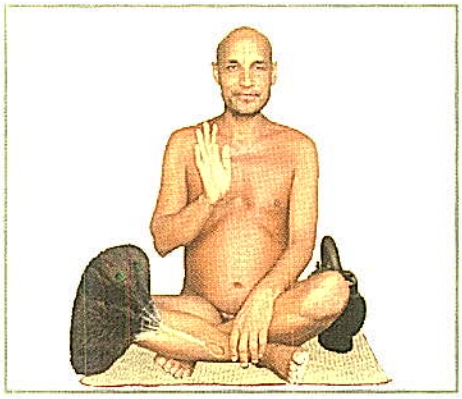

आचार्य सिद्धांतसागरजी महाराज

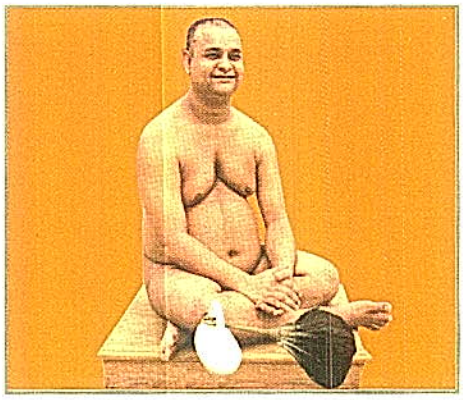

उपाध्याय ऊर्जयंतसागरजी महाराज

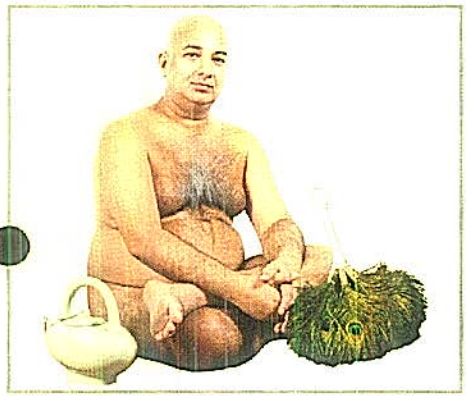

ऐलाचार्य अतिवीरजी महाराज

मुनि श्री विहर्षसागरजी महाराज

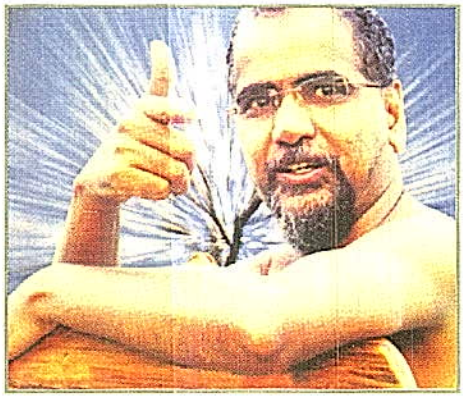

मुनि श्री तरुणसागरजी महाराज

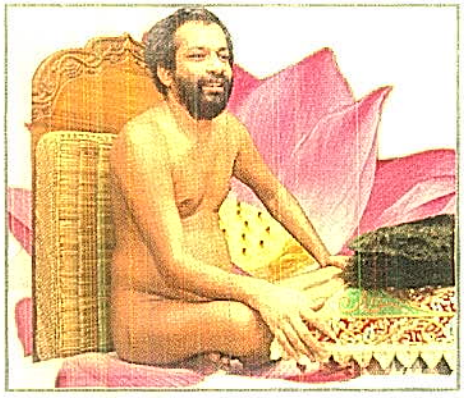

ऐलाचार्य श्री श्रुतसागरजी महाराज

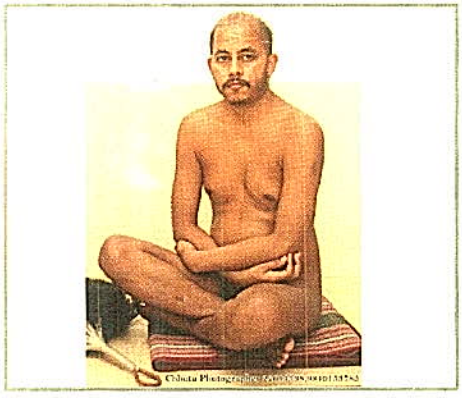

ऐलाचार्य श्री प्रज्ञसागरजी महाराज

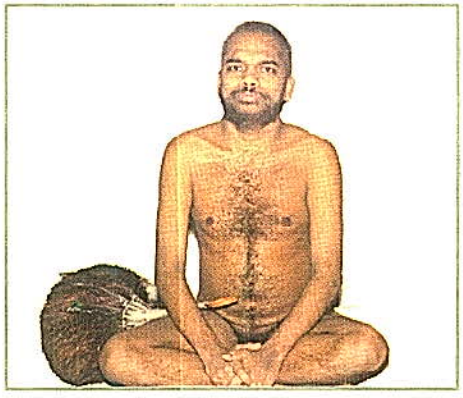

उपाध्याय श्री सौभाग्यसागरजी महाराज

जीवन का विकास बाह्य संसाधनों से नहीं, साधना से होता है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

Shri Rajannan Chandrabosh, Uppuvellore

Smt. Madhavi Sureshkumar Jain, Melmalayanur

Shri Dhanyakumar Vasupalan Jain, Vandavasi

Shri Elangavan Vijayakeerthy Jain, Vandavasi

Shri Santhakumar Arugakeerti Jain, Vandavasi

Shri Devakumar Ponusamy Jain, Vandavasi

Shri Bhagubali Appavu Jain, Vandavasi

Shri Jeevagarajan Ayyadurai Jain, Vandavasi

Shri Shivkumar Vijayakeerthi Jain, Somasipadi

Shri Aadirajan Jeevagan Jain, Vandavasi

Shri Ramesh Parshwanathan Jain, Velapandal

Shri Jeevagan Virushabadoss Jain, Melmalayanur

Shri Vijayan Sampath Jain, Thayanur

Shri Kumar Gunabalan Jain, Melmalayanur

Shri Nagendran Ayyanna Nainar, Thorappadi

Smt. Suguna Nagendran Jain, Thorappadi

Shri Rajeshkumar Arugadoss Jain, Melmalayanur

Shri Chandrageupthan Virushba doss Jain, Melmalayannur

Shri Ajithan Kuppusamy Jain, Thatchur

Shri Mohandoss Vijjirapagu Jain, Gingee

Smt. Mekala Duraisamy Jain, Gingee

Shri Rajasekar Krishna samy Jain, Tindivanam

Shri Bagubali Padnaraj Jain, Kalasapakkam

Shri Sridhar Naaraj Jain, Kalasapakkam

Shri Ravindra Doss Gembera Nainar Jain, Perumpugai

सरलता, सादगी और सद्भावना ही जीवन का सही धर्म है।

आजीवन सदस्य

Shri Babu Deepanthan Jain, Gingee

Shri Rajesh Mani Jain, Somasipadi

Shri Gowtham Sagar Appandai Nainar Jain, Gingee

Shri Devakumar Sreepalan Jain, Gingee

Shri Anantha Kumar Ajithadoss Jain, Tindivanam

Shri Ashok Ajithdoss Jain, Gingee

Shri Sripal Virushabadoss Jain, Pondycherry

Shri Jeevadoss Vasukumar Jain, Pondicherry

Shri Vijayabalan Adhiraj Jain, Nallavanpalayan

Shri Jeevendhiran Neminathan Jain, Valapandal

Shri Adhirajan Sukumar Jain, Valapandal

Shri Indrakumaran Duraisamy Jain, Valapandal

Shri Sekar Parsuvanathan Jain, Valapandal

Shri Doss Swarnabathiran Jain, Somasipadi

Shri Jayamani Devakumaran Jain, Vandavasi

Shri Dhinesh Bhagubali Jain, Vandavasi

Shri Suresh Kumar Jambukumar Jain, Melmalayanur

Shri Rajasekar Adinathan Jain, Mullipattu

Shri Vajjiram Vasupalan Jain, Somasipadi

Shri Santhakumar Appandarji Jain, Uppuvellore

Shri Sukumaran Badmaraj Jain, Erumbur

Shri Dhanniya Kumar Appandaraj Nainar, Uppuvellore

Shri Appa Swamy Ananhavijayan Jain, Upuvellur

Shri Banukumar Appandarji Jain, Uppuvellore

Shri Shekar Appachi Jain, Nallavan Palayan

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है।

आजीवन सदस्य

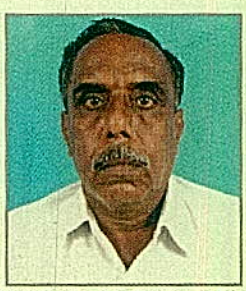
Shri Chandra doss Duraisamy Jain, Nallavan Palayan

Shri Bagubali Chak

Shri Rajashekar Vijayabalan Jain, Nallavanpalayan

Shri Logachandiran Saminathan Jain, Somasipadi

Shri Muthusamy Vasudevan Jain, Somasipadi

Shri Kumar Perumal Jain, Nalavan Palayan

Shri Jinakaran Parswanathan Jain, Nallavan Palayam

Shri Keerthi Nagaraj Jain, Nallavanpalayam

Shri Vijayaraj Rajendiran Jain, Perambur

Shri Kalayankumar Jinakumar Jain, Venkunam

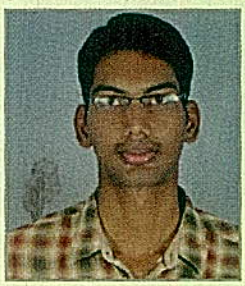
Shri Vimal Prabhu Sureshkumar Jain, Vandavasi

Shri Baskaran Dharanenthiran Jain, Vandavasi

Shri Sridhar Sundarakumar Jain, Vandavasi

Shri Rajkumar Pandiyan Jian, Kodanollur

Shri Bharadhan Vijaybalan Jain, Nallavanpalayam

Shri Raja Appendairaj Jain, Nallavan Palayam

Shri Sampathraj Rajendran Jain, Nallavan Palayam

Shri Rajasekaran Jinachandiran Jain, Vandavasi

Shri Ajit Doss Dhanpal Jain, Melmalaynur

Shri Vijayaraj Jayantharav Jain, Nallavan Palayam

Shri Jeenadoss Appadurai Jain, Nallavan Palayam

Shri Anantha Vijayan Arugadoss, Tiruvannamalai

Shri Dhrani Samirajan Jain, Nallavan Palayam

Shri Kuppusamy Sampath Jain, Nallavan Palayam

Shri Pattusamy Parswanathan Jain, Nallavan Palayam

जीवन को उन्नत और ऊँचाई पर ले जाने के लिए धर्म ही एकमात्र साधन है।

बड़ागांव में त्रिलोकतीर्थ जिनालय की पंचकल्याणक तिथि घोषित

आचार्य ज्ञानसागरजी के सान्निध्य में ११ से २३ फरवरी २०१५ तक अद्भूत पंचकल्याणक ३५०० से अधिक प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा होगी

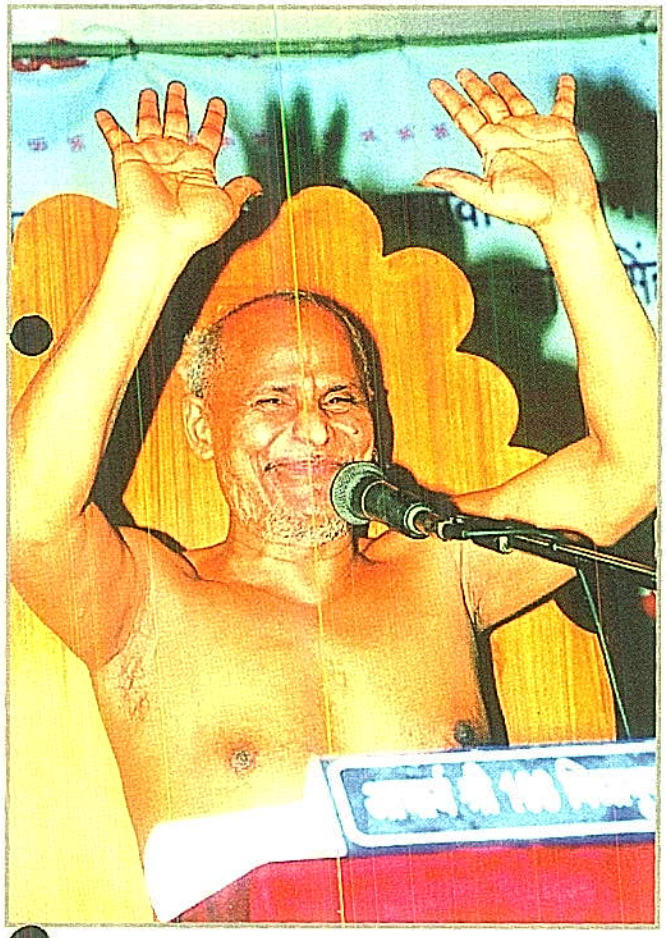

बड़ागांव । प्रशम मूर्ति आचार्यश्री शांतिसागरजी

महाराज (छाणी) परम्परा के पंचम पट्टाधीश समाधिस्थ आचार्य विद्याभूषण सन्मतिसागरजी महाराज की परिकल्पना, पावन प्रेरणा से अतिशय क्षेत्र बड़ागांव में निर्मित हो रही ३१७ फुट उत्तुंग १८४ ग १८४ स्थलीय भाग में निर्मित दिल्ली के लाल किले से दर्शनीय विश्व की एकमात्र रचना त्रिलोक तीर्थ का अद्भुत अंतर्राष्ट्रीय स्तर का भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आगामी वर्ष २०१५ में ११ फरवरी से २३ फरवरी तक विभिन्न आयोजनों के साथ किया जावेगा ।

आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में होने वाले उक्त आयोजन की तिथियों की घोषणा करते हुए प्रतिष्ठाचार्य बा.ब्र.जयकुमार जैन 'निशांत' ने बताया कि आचार्यश्री के सान्निध्य में पहली बार ग्यारह दिवसीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होगी, जिसमें ३५०० से अधिक मनोज्ञ प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा विधि संपन्न होगी । आचार्यश्री के बड़ागांव चातुर्मास होने से त्रिलोकतीर्थ के निर्माण में तेजी आई है व कमेटी के अध्यक्ष गजराज गंगवाल ट्रस्टीगण आचार्यश्री के मार्गदर्शन में कार्य द्रुतगति से संपन्न करा रहे है ।

– राजेन्द्र जैन 'महावीर'
२१७, सोलंकी कॉलोनी
सनावद, जिला खरगोन (म.प्र.)
मो. ९४०७४–९२५७७

श्रद्धांजलि

श्री वसंतलालजी किकावत, मुंबई का देहावसान

यह सूचित करते हुए दुःख हो रहा है कि समाजरत्न, मुनिभक्त, भामा शाह, विभिन्न संस्थाओं के प्रेरणादायक, तीर्थक्षेत्र कमेटी के आजीवन सदस्य तथा तीर्थक्षेत्र पोदनपुर मंदिर के ट्रस्टी श्री वसंतलालजी किकावत का दिनांक 24 जून, 2014 को स्वर्गवास हो गया।

श्री किकावत जी धर्मनिष्ठ, सरल स्वभावी, सादगीभरा जीवन और मुनिराजों के प्रति अगाढ़ श्रद्धा भक्ति रखने वाले धर्मात्मा व्यक्ति थे। वे समाज को समन्वय-अनेकांत एवं सकारात्मक रूप से सभी को साथ में लेकर चलते थे। वे एक उत्साही एवं कर्मठ व्यक्तित्व के धनी, समाज के गौरव महापुरुष थे। उत्साही कार्यकर्ता थे। वे समाज के कार्यों में अग्रगण्य होकर तन, मन, धन से समर्पित होकर कार्य करते थे। उनके निधन से जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक संतप्त कुटुम्बीजनों को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति मिले, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना करता है।

बोलना स्वर्ण है किन्तु मौन स्वर्ण से निर्मित आभूषण है ।